ओ३म्

# पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - २१ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र नवम्बर ( प्रथम ) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

''उन्होंने (कर्सनजीने) टंकारा के राजकोट दरवाजे के बाहर डेमी नदी के तटपर एक शिव-मंदिर की स्थापना की थी जिसका नाम 'कुबेरनाथ जी का शिवालय' है।''

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

**वर्ष** : ५७ **अंक** : २१
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: कार्तिक कृष्ण, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

**सम्पादक**
प्रो. धर्मवीर

**प्रकाशक**-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

**मुद्रक**-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

**-परोपकारी का शुल्क-**

**भारत में**

**वार्षिक**-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

**विदेश में**

**वार्षिक**-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

**वैदिक पुस्तकालय** : ०१४५-२४६०१२०
**ऋषि उद्यान** : ०१४५-२६२१२७०

*लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।*

ओ३म्

*विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,*
*सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।*
*संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,*
*धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।*

RNI. No. ३९५९/५९

# परोपकारी

## नवम्बर प्रथम २०१५

## अनुक्रम

| | | |
|---|---|---|
| १. हिन्दू कौन - हिन्दू की परिभाषा | सम्पादकीय | ०४ |
| २. कुछ तड़प-कुछ झड़प | राजेन्द्र जिज्ञासु | १० |
| ३. ''ईश्वर की सिद्धि में प्रत्याक्षादि..... | डॉ. कृष्णपालसिंह | १७ |
| ४. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन | | २२ |
| ५. पृथिव्यादि भूतों के संयोग से शरीर.... | सत्येन्द्र सिंह आर्य | २५ |
| ६. ऋषि मेला - २०१५ कार्यक्रम | | ३३ |
| ५. सघन-साधना-शिविर रोजड़ की.... | ब्र. राजेन्द्रार्य: | ३७ |
| ९. पुस्तक-समीक्षा | | ३९ |
| ५. आर्यों का समाज कहाँ है? | सोहनलाल कटारिया | ४० |
| ७. जिज्ञासा समाधान-९८ | आचार्य सोमदेव | ४१ |
| १०. स्तुता मया वरदा वेदमाता-२० | | ४२ |
| ८. संस्था-समाचार | | |
| ११. आर्यजगत् के समाचार | | |

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

**- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -**
**www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan**

# हिन्दू कौन - हिन्दू की परिभाषा

अक्टूबर मास के दिनांक १२ के दैनिक भास्कर अजमेर के संस्करण में एक समाचार छपा, जिसमें लिखा था- भारत सरकार को पता नहीं है, हिन्दू क्या होता है? एक सामाजिक कार्यकर्ता ने भारत सरकार के गृह मन्त्रालय से भारत के संविधान और कानून के सम्बन्ध में हिन्दू शब्द की परिभाषा पूछी। गृह मन्त्रालय के केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी ने कहा है कि इसकी उनके पास कोई जानकारी नहीं है। यह एक विडम्बना है कि दुनिया के सारे देशद्रोही मिलकर हिन्दू को समाप्त करने पर तुले हैं और इसमें देश में रहने वाले को पता नहीं है कि वह हिन्दू क्यों है और वह हिन्दू नहीं तो हिन्दू कौन है?

आज आप हिन्दू की परिभाषा करना चाहे तो आपके लिये असम्भव नहीं तो यह कार्य कठिन अवश्य है। आज किसी एक बात को किसी भी हिन्दू पर घटा नहीं सकते। हिन्दू समाज की कोई मान्यता, कोई सिद्धान्त, कोई भगवान् कुछ भी ऐसा नहीं है, सभी हिन्दुओं पर घटता हो और सभी को स्वीकार्य हो। हिन्दू समाज की मान्यतायें परस्पर इतनी विरोधी हैं कि उनको एक स्वीकार करना सम्भव नहीं है। ईश्वर को एक और निराकार मानने वाला भी हिन्दू है, अनेक साकार मानने वाले भी हिन्दू हैं। वेद की पूजा करने वाले हिन्दू हैं, वेद की निन्दा करने वाले भी हिन्दू। इतने कट्टर शाकाहारी हिन्दू हैं कि वे लाल मसूर या लाल टमाटर को मांस से मिलता-जुलता समझकर अपनी पाकशाला से भी दूर रखते हैं, इसके विपरीत काली पर बकरे, मुर्गे, भैसों की बलि देकर ही ईश्वर को प्रसन्न करते हैं। केवल शरीर को ही अस्तित्व समझने वाले हिन्दू हैं, दूसरे जीव को ब्रह्म का अंश मानने वाले अपने को हिन्दू कहते हैं, ऐसी परिस्थिति में आप किन शब्दों में हिन्दू को परिभाषित करेंगे।

आज के विधान से जहाँ अपने को सभी अल्पसंख्यक घोषित कराने की होड़ में लगे हैं- बौद्ध, जैन, सिक्ख, राम-कृष्ण मठ आदि अपने को हिन्दू इतर बताने लगे हैं फिर आप हिन्दू को कैसे परिभाषित करेंगे। परिभाषा करने का कोई न कोई आधार तो होना चाहिए। सावरकर जी ने जो **हिन्दू आसिन्धू सिन्धु पर्यान्ता** कह सिन्धु प्रदेश को अपनी पुण्यभूमि पितृभूमि स्वीकार किया है, वह हिन्दू है, ऐसा कहकर हिन्दू को व्यापक अर्थ देने का प्रयास किया है। हिन्दू महासभा के प्रधान प्रो. रामसिंह जी से किसी ने प्रश्न किया- हिन्दू कौन है? तो उन्होंने कहा हिन्दू-मुस्लिम दंगों में मुसलमान जिसे अपना शत्रु मानता है वह हिन्दू है। राजनेता न्यायालयों में भी हिन्दू शब्द को परिभाषित करते हुए एक जीवन पद्धति बताकर परिभाषित करने का यत्न किया था। यह भी एक अधूरा प्रयास है। हिन्दुओं की कोई एक जीवन पद्धति ही नहीं है। हिन्दू संगठन की घोषणा करने वालों ने कहा- अनेकता में एकता हिन्दू की विशेषता। इस आधार पर आप एकता कर ही नहीं सकते। हिन्दू एकता केवल देशद्रोही संगठनों की चर्चा में होती है। यदि अनेकता में एकता बन सकती तो आज मुसलमानों से भी अधिक संगठित होना चाहिए परन्तु हिन्दू नाम एकता का आधार कभी नहीं बन सका। हिन्दू-समाज में एकता की सबसे छोटी इकाई परिवार है, जिसमें व्यक्ति अपने को सुरक्षित मानता है। हिन्दू-समाज की सबसे बड़ी इकाई उसकी जाति है। वह जाति के नाम पर आज भी संगठित होने का प्रयास करते हैं। सामाजिक हानि-लाभ के लिये बड़ी इकाई जाति है, कोई भी जाति हिन्दू-समाज का उत्तरदायित्व लेने के लिये तैयार नहीं होती परन्तु हिन्दू कहने पर वे लोग अपने को हिन्दू कहते हैं। जाति हिन्दू-समाज की एक इतनी मजबूत ईकाई है कि व्यक्ति यदि दूसरे धर्म को स्वीकार कर लेता है तो भी वह अपनी जाति नहीं छोड़ना चाहता, जो लोग ईसाई या मुसलमान भी हो गये, यदि वे समूह के साथ धर्मान्तरित हुए हैं तो वहाँ भी उनकी जाति, उनके साथ जाती है। जाट हिन्दू भी है, जाट मुसलमान भी है, राजपूत हिन्दू भी है, राजपूत मुसलमान भी है। गूजर हिन्दू भी है, गूजर मुसलमान भी है। इस प्रकार आपको केवल जाति के आधार पर हिन्दू की परिभाषा करना कठिन होगा।

ऐसी परिस्थिति में हिन्दू की परिभाषा कठिन है परन्तु हिन्दू का अस्तित्व है तो परिभाषित भी होगा। हिन्दू को परिभाषित करने के हमारे पास दो आधार बड़े और महत्त्वपूर्ण हैं- एक आधार हमारा भूगोल और दूसरा आधार हमारा इतिहास है। हमारा भूगोल तो परिवर्तित होता रहा है, कभी हिन्दुओं का शासन अफगानिस्तान, ईरान तक फैला था तो आज पाकिस्तान कहे जाने वाले भूभाग को आप हिन्दू होने के कारण अपना नहीं कह सकते परन्तु हिन्दू के इतिहास में आप उसे हिन्दू से बाहर नहीं कर सकते। भारत पाकिस्तान के विभाजन का आधार ही हिन्दू और मुसलमान था। फिर हिन्दू की परिभाषा में विभाजन को आधार तो मानना ही पड़ेगा, उस दिन जिसने अपने को हिन्दू कह और भारत का नागरिक बना, उस दिन वह हिन्दू ही था, आज हो सकता है वह हिन्दू न रहा हो।

हिन्दू कोई थोड़े समय की अवधारणा नहीं है। हिन्दू शब्द से जिस देश और जाति का इतिहास लिखा गया है, उसे आज आप किसी और के नाम से पढ़ सकते हैं। इस देश में जितने बड़े विशाल भूभाग पर जिसका शासन रहा है और हजारों वर्ष के लम्बे काल खण्ड में जो विचार पुष्पित पल्लवित हुये। जिन विचारों को यहाँ के लोगों ने अपने जीवन में आदर्श बनाया, उनको जीया है, क्या उन्हें आप हिन्दू इतिहास से बाहर कर सकते हैं? उस परम्परा को अपना मानने वाला क्या अपने को हिन्दू नहीं कहेगा। हिन्दू इतिहास के नाम पर जिनका इतिहास लिखा गया, उन्हें हिन्दू ही समझा जायेगा, वे जिनके पूर्वज हैं, वे आज अपने को उस परम्परा से पृथक् कर पायेंगे? भारत की पराधीनता के समय को कौन अच्छा कहेगा। यह देश सात सौ वर्ष मुसलमानों के अधीन रहा, जो इस परिस्थिति को दु:ख का कारण समझता है, वह हिन्दू है। यदि कोई व्यक्ति इस देश में औरंगजेब के शासन काल पर गर्व करे तो समझा जा सकता है वह हिन्दू नहीं है। इतिहास में शिवाजी, राणाप्रताप, गुरु गोविन्दसिंह जिससे लड़े वे हिन्दू नहीं थे और जिनके लिये लड़े थे वे हिन्दू हैं, क्या इसमें किसी को सन्देह हो सकता है?

देश-विदेश के जिन इतिहासकारों ने जिस देश का व जाति का इतिहास लिखा, उन्होंने उसे हिन्दू ही कहा था। यही हिन्दू की पहचान और परिभाषा है। आजकल के विद्वान् जिसको परम प्रमाण मानते हैं, ऐसे मैक्समूलर ने भारत के विषय में इस प्रकार अपने विचार प्रकट किये हैं- ''मानव मस्तिष्क के इतिहास का अध्ययन करते समय हमारे स्वयं के वास्तविक अध्ययन में भारत का स्थान विश्व के अन्य देशों की तुलना में अद्वितीय है। अपने विशेष अध्ययन के लिये मानव मन के किसी भी क्षेत्र का चयन करें, चाहे व भाषा हो, धर्म हो, पौराणिक गाथायें या दर्शनशास्त्र, चाहे विधि या प्रथायें हों, या प्रारम्भिक कला या विज्ञान हो, प्रत्येक दशा में आपको भारत जाना पड़ेगा, चाहे आप इसे पसन्द करें या नहीं, क्योंकि मानव इतिहास के मूल्यवान् एवं ज्ञानवान् तथ्यों का कोष आपको भारत और केवल भारत में ही मिलेगा।''

दिसम्बर १८६१ के द कलकत्ता रिव्यू का लेख भी पठनीय है- आज अपमानित तथा अप्रतिष्ठित किये जाने पर भी हमें इसमें कोई सन्देह नहीं है कि एक समय था जब हिन्दू जाति, कला एवं शास्त्रों के क्षेत्र में निष्णात, राज्य व्यवस्था में कल्याणकारी, विधि निर्माण में कुशल एवं उत्कृष्ठ ज्ञान से भरपूर थी।

पाश्चात्य लेखक मि. पियरे लोती ने भारत के प्रति अपने विचार इन शब्दों में प्रकट किये हैं- ''ऐ भारत! अब मैं तुम्हें आदर सम्मान के साथ प्रणाम करता हूँ। मैं उस प्राचीन भारत को प्रणाम करता हूँ, जिसका मैं विशेषज्ञ हूँ। मैं उस भारत का प्रशंसक हूँ, जिसे कला और दर्शन के क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। ईश्वर करे तेरे उद्‌बोधन से प्रतिदिन ह्रासोन्मुख, पतित एवं क्षीणता को प्राप्त होता हुआ तथा राष्ट्रों, देवताओं एवं आत्माओं का हत्यारा पश्चिम आश्चर्य-चकित हो जाये। वह आज भी तेरे आदिम-कालीन महान् व्यक्तियों के सामने नतमस्तक है।''

अक्टूबर १८७२ के द एडिनबर्ग रिव्यू में लिखा है- हिन्दू एक बहुत प्राचीन राष्ट्र है, जिसके मूल्यवान् अवशेष आज भी उपलब्ध हैं। अन्य कोई भी राष्ट्र आज भी सुरुचि और सभ्यता में इससे बढ़कर नहीं है, यद्यपि यह सुरुचि की पराकाष्ठा पर उस काल में पहुँच चुका था, जब वर्तमान सभ्य कहलाने वाले राष्ट्रों में सभ्यता का उदय भी नहीं हुआ था, जितना अधिक हमारी विस्तृत साहित्यिक खोंजें

इस क्षेत्र में प्रविष्ट होती हैं, उतने ही अधिक विस्मयकारी एवं विस्तृत आयाम हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं।

पाश्चात्य लेखिका श्रीमती मैनिकग ने इस प्रकार लिखा है- ''हिन्दुओं के पास मस्तिष्क का इतना यापक विस्तार था, जितनी किसी भी मानव में कल्पना की जा सकती है।''

ये पंक्तियाँ ऐसे ही नहीं लिखी गई हैं। इन लेखकों ने भारत की प्रतिभा को अलग-अलग क्षेत्रों में देखा और अनुभव किया। भारतीय विधि और नियमों को मनुस्मृति आदि स्मृति ग्रन्थों में। प्रशासन की योग्यता एवं मानव मनोविज्ञान का कौटिल्य अर्थशास्त्र जैसे प्रौढ़ ग्रन्थों में देखने को मिलता है। यह ज्ञान-विज्ञान हजारों वर्षों से भारत में प्रचलित है। इतिहासकार काउण्ट ब्जोर्न्स्ट जेरना ने भारत राष्ट्र प्राचीनता पर विचार करते हुए लिखा है- ''विश्व का कोई भी राष्ट्र सभ्यता एवं धर्म की प्राचीनता की दृष्टि से भारत का सामना नहीं कर सकता।''

भारतीय इतिहास में, तुलामान, दूरी का मान, काल मान की विधियों को देखकर विद्वान् उनको देखकर दांतों तले उंगली दबा लेता है। आप सृष्टि की काल गणना से असहमत हो सकते हैं परन्तु भारतीय समाज में पढ़े जाने वाले संकल्प की काल गणना की विधि की वैज्ञानिकता से चकित हुए बिना नहीं रह सकते।

महाभारत, रामायण जैसे ऐतिहासिक ग्रन्थ पुराणों की कथाओं के माध्यम से इतिहास की परम्परा का होना। हिन्दू समाज के गौरव के साक्षी हैं। मनु के द्वारा स्थापित वर्ण-व्यवस्था और दण्ड-विधान श्रेष्ठता में आज भी सर्वोपरि हैं। संस्कृति की उत्तमता में वैदिक संस्कृति की तुलना नहीं का जा सकती। यहा का प्रभाव संसार के अनेक देशों द्वीप-द्वीपान्तरों में आज भी देखने को मिलता है। यहाँ के दर्शन, विज्ञान, कला, साहित्य, धर्म, इतिहास, समाजशास्त्र ऐसा कौनसा क्षेत्र है, जिस पर हजारों वर्षों का गौरवपूर्ण चिन्तन करना अंकित है। ये विचार जिस देश के हैं, उसे हिन्दू राष्ट्र कहते हैं और इन विचारों को जो अपनी धरोहर समझता है, वही तो हिन्दू है। कोई मनुष्य लंगड़ा, लूला, अन्धा होने पर व्यक्ति नहीं रहता, ऐसा तो नहीं है। नाम भी बदल ले तो दूसरा नाम भी तो उसी व्यक्ति का होगा। वह वैदिक था, आर्य था, पौराणिक हो गया, बाद में हिन्दू बन गया, सारा इतिहास तो उसी व्यक्ति का है। जिसे केवल अपने विचार, कला, कृतित्व पर ही गर्व नहीं, उसे अपने चरित्र पर भी उतना ही गर्व है। तभी तो वह कह सकता है, यह विचार उन्ही हिन्दुओं का है जो इस श्लोक को पढ़ कर गर्व अनुभव करते हैं, यही इसकी परिभाषा है-

**एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।**
**स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।**

**- धर्मवीर**

---

**पृष्ठ संख्या ४२ का शेष भाग.....**

**६. शिविर सम्पन्न**- आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा, जीन्द में २ से ४ अक्टूबर २०१५ तक आर्यवीर दल, जीन्द का तीन दिवसीय आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। गुरुकुल कालवा के आचार्य राजेन्द्र जी, स्वामी वेदरक्षानन्द जी और स्वामी सोमानन्द जी के कुशल मार्गदर्शन में यह शिविर अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, उक्त शिविर में अनेक गाँवों से १५० के लगभग आर्यवीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। व्यायाम शिक्षक श्री यज्ञवीर आर्य, श्याम आर्य और सचिन आर्य ने सर्वांगसुन्दर व्यायाम, लाठी, तलवार, छुरी, भाला, योगासन, प्राणायाम, ध्यान तथा संध्या-हवन का विशेष प्रशिक्षण दिया। विद्वानों ने प्रवचन व उपदेशों के द्वारा वैदिक संस्कृति की उच्चता का बोध कराया।

### चुनाव समाचार

**७. आर्यसमाज मानटाउन, बजरिया, सवाई माधोपुर, राज.** के चुनाव में **प्रधान**- डॉ. आर.पी. गुप्ता, **मन्त्री**- श्री रामजीलाल आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री सोमेशचन्द माहेश्वरी को चुना गया।

### शोक समाचार

८. आर्ष कन्या गुरुकुल देवरी प्रहलादपुर सोरो की प्रधाना जनपद कासगंज की **श्रीमती चन्द्रादेवी** की आकस्मिक निधनोपरान्त शान्ति यज्ञ गुरुकुल प्रांगण में आयोजित हुआ, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों ने जीवन मृत्यु पर विचार व्यक्त किये तथा श्रीमती चन्द्रावती जी के परिवार की ओर से आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा, आर्ष गुरुकुल अंगोरी एवं आर्यसमाज कासगंज को ५१००/- रु. क्रमशः दान दिये।

# परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
# १३२ वाँ ऋषि बलिदान समारोह
## दिनांक २०, २१, २२ नवम्बर २०१५, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्ग दर्शन देता रहता है, जिसके कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३२ वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

**ऋग्वेद पारायण यज्ञ**- १६ नवम्बर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहूति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २२ नवम्बर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यानन्द वेदवागीश होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

**वेदगोष्ठी** - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत करना चाहते हैं, वे ३० अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। २०, २१, २२ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

**चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता**- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २० नवम्बर को परीक्षा एवं २१ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय ३० अक्टूबर, २०१५ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

**सम्मान** - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं, उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तद्नुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३२ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

**ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्**- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर,आचार्य विजयपालजी-झज्जर, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमारजी, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्विद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बडौत, आचार्या सूर्या देवी जी - शिवगंज, डॉ. राजेन्द्रजी विद्यालंकार, सत्येन्द्रसिंह जी- मेरठ, डॉ. कृष्णपाल सिंह जी- जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा- जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी -इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री सत्यपाल जी पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह जी, पं. कलानाथ शास्त्री-जयपुर, डॉ. जगदेव विद्यालंकार, पं. देवनारायण तिवाड़ी- कोलकाता, श्रीमती अमृत बहन- दिल्ली, श्री राकेश- अमृतसर, श्रीमती इन्दुपुरी-मोगा, आचार्य ओम्प्रकाश-आबूपर्वत, डॉ. रामनारायण शास्त्री- जोधपुर, डॉ. मुमुक्षु आर्य- दिल्ली, डॉ. नयन कुमार-परली महा., श्री माधव देशपाण्डे- मन्त्री महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, पं. पूनमचन्द नागर- अहमदाबाद, डॉ. सच्चिदानन्द महापात्र- पुरी ओडिशा, डॉ. नरदेव गुड़े- लातूर, श्री विद्यामित्र ठकुराल- दिल्ली, श्री सुरेश अग्रवाल- प्रधान गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा, पं. रामचन्द्र- सोनीपत, डॉ. ओम्प्रकाश होलीकर- लातूर, स्वामी सुधानन्द- ओड़िशा, श्री सत्यवीर शास्त्री- रोहतक, डॉ. शिवदत्त पाण्डे- सुल्तानपुर, पं. धीरेन्द्र पाण्डे- जबलपुर, डॉ. सुकुमार आर्य- मैंगलूर कर्नाटक, डॉ. सुरेन्द्र- रोहतक, डॉ. धर्मवीर कुण्डू- हरियाणा, ब्र. नन्दकिशोर, डॉ. विरेन्द्र अलंकार-चण्डीगढ़, डॉ. सुरेन्द्र- चण्डीगढ़ आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

| | | |
|---|---|---|
| गजानन्द आर्य | धर्मवीर | ओम मुनि |
| प्रधान | कार्यकारी प्रधान | मन्त्री |

# कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

**ऋषि दयानन्द जी का पत्र व्यवहार:-** महर्षि दयानन्द जी के पत्र-व्यवहार का अपना ही महत्व है। आज इस पत्र-व्यवहार के महत्व पर तो यहाँ कुछ विशेष न लिखकर परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशनाधीन इसके नवीनतम संस्करण पर ऋषि भक्तों की जानकारी के लिये कुछ निवेदन किया जायेगा। हमारे कई महापुरुषों ने इस करणीय कार्य के लिए बड़ी तपस्या की है। हम महात्मा मुंशीराम जी, पं. चमूपति जी, पं. भगवद्दत्त जी, पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक तथा भक्त मामराज जी द्वारा पत्र-व्यवहार के संग्रह के लिए ऋणी हैं। पं. लेखराम जी की ऊहा के बलिहारी, जिन्होनें सर्वप्रथम पत्रों की खोज का यज्ञ आरम्भ किया और इनका भरपूर उपयोग किया।

पत्र-व्यवहार के अब तक कई संस्करण छप चुके हैं। ऋषि के नाम लिखे गये पत्रों को संग्रहित करके पृथक प्रकाशित किया जाता रहा और ऋषि जी द्वारा उन पत्रों का उत्तर महर्षि के पत्रों के साथ छपता रहा। इससे पाठकों व गवेषकों को पूरा लाभ नहीं मिलता। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पत्र-व्यवहार की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि ऋषि के नाम आये प्रत्येक पत्र को ऋषि के पत्रोत्तर के साथ ही दिया गया है। इसमें सभा के कई विद्वानों ने सहयोग किया है परन्तु इस कार्य को सिरे चढ़ाने में डा. वेदपाल जी का श्रम व साधना वन्दनीय है। उनकी कोटि का विद्वान् ही इस अति कठिन कार्य को सम्पन्न कर सकता था।

अन्तिम प्रूफ भी आपने ही पढ़ने की कृपा की। छपने से पूर्व इस सेवक को भी इस ग्रन्थ माला पर एक दृष्टि डालने का आदेश हुआ है। डा. वेदपाल जी के श्रम की तो सब विद्वान् भूरि-भूरि प्रशंसा करेंगे ही। इस कठिन कार्य में एक बहुत बड़ी समस्या और रही जिस पर पहले विचार न किया गया। पं. लेखराम जी तथा देवेन्द्र बाबू जी ने अपने ग्रन्थों में यत्र तत्र कई ऐसे पत्रों के पत्रांश दिये हैं जो अब तक मिल ही नहीं सके। ऋषि के नाम लिखे गये अनेक उर्दू पत्रों का उत्तर उर्दू में ही दिया गया। उनका अनुवाद पं. लेखराम जी के ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद से उद्धृत किया गया है।

अनुवादक एक आदरणीय आर्य पुरुष उर्दू कवि रघुनन्दनसिंह जी थे। मैं भी उनका प्रशंसक हूँ परन्तु वह फ़ारसी भाषा नहीं जानते थे। यह पता मुझे ऋषि-जीवन पर कार्य करते समय चला। मैंने इस विषय में लिखा भी। मौलवी मुहम्मद कासिम जैसे मौलवियों के पत्रों में फारसी के पद्य व कठिन शब्दों को कहीं-कहीं अनुवादक समझ ही नहीं सका। मौलवी जी को उत्तर देते हुए ऋषि के पत्र में 'सबत' शब्द का प्रयोग हुआ है। अनुवादक जी ने इसे साबत (प्रमाणित) समझ लिया और 'साबत' छपा मिलता है। होना चाहिये था सबत (लिखना)। वाक्य हीनिरर्थक बना दिया गया। यहाँ आदरणीय वेदपाल जी क्या करते?

रुड़की के पत्र-व्यवहार में दो गोरों की चर्चा है। एक का नाम था STEWART स्टीवार्ट। सुधार तो हमने कर दिया परन्तु, STEWART नाम शुद्ध है इसका प्रमाण पाद टिप्पणी में न दिया गया। अब पत्र व्यवहार के सामने आने पर फिर से प्रमाण खोजने पड़े। श्रीयुत हरविलास जी शारदा ने STEWART एकदम शुद्ध लिखा है। ऋषि के समकालीन एक और जीवनी लेखक मेहता राधा किशन जी के ग्रन्थ में भी स्टीवार्ट ही छपा मिलता है। शेष फिर।

**ऋषि के पत्रों में लुप्त इतिहास के स्रोत:-** ऋषि जीवन पर लिखने व बोलने वालों ने ऋषि जीवन में चर्चित गोरे लोगों व उस काल के अंग्रेजी पठित भारतीयों, पादरियों व मौलवियों के नाम के साथ नये-नये विशेषण गढ-गढ़ कर जोड़े और उनको महिमा मण्डित व प्रचारित करके अपनी रिसर्च की तो धौंस जमा दी परन्तु ऋषि के भक्तों, समर्पित आर्य पुरुषों, आर्य समाज की नींव के पत्थरों की उपेक्षा से स्वर्णिम इतिहास का लोप हो गया। हमारे कुछ लोगों ने ए.ओ. ह्यूम, मैक्समूलर व वोमेशचन्द्र बनर्जी की तो बड़ी रट लगाई। परन्तु ठाकुर भोपाल सिंह, ठाकुर मुन्नासिंह, ठाकुर मुकन्दसिंह, भाई ज्ञानसिंह, ला. मुरलीधर, ला. लक्ष्मीनारायण, राव युधिष्ठिरसिंह और पं. गोपाल शास्त्री,

पं. भानुदत्त को विसार दिया। सर सैयद के बृहत जीवन चरित्र में "श्री स्वामी दयानन्द" बस यही तीन शब्द मिलते हैं।

भाई ज्ञानसिंह अग्नि-परीक्षा देने वाला एक प्रमुख आर्य था। शुद्धि-आन्दोलन का पंजाब में पहला कर्णधार था। पं. लेखराम जी ने उनकी प्रशंसा की है। पत्र व्यवहार में उनकी चर्चा है। पत्र व्यवहार में वर्णित आर्यों की सूची बनानी होगी। जितना बन सकेगा, यह सेवक उन सब का इतिहास खोद-खोद कर खोज देगा।

**लाला दीवानचन्द का महत्त्वपूर्ण लेख:**- डी.ए.वी. कालेज कानपुर के एक स्वर्गीय प्राचार्य ला. दीवानचन्द जी एक जाने माने शिक्षा शास्त्री तथा अनुभवी विचारक थे। लखनऊ से चलभाष पर प्राप्त एक प्रश्न का उत्तर देते हुए इस सेवक ने प्रश्नकर्त्ता को ला. दीवानचन्द जी के कुछ वाक्य सुनाये तो उस विचारशील पाठक ने इस पर परोपकारी में कुछ विस्तार से लिखने की प्रेरणा दी। उस सुपठित युवक ने कहा, "मैंने तो कभी ला. दीवानचन्द जी का यहा कथन सुना व पढ़ा ही नहीं।"

रोग यह है कि आर्य समाज में बड़े-बड़े नाम गिनाने व पुस्तकों की सूचियाँ बनाने को ही शोध व प्रचार माना जाने लगा है। पं. चमूपति जी, स्वामी वेदानन्द जी की पुस्तकों में लिखा क्या है? यह कौन पढ़ता व सुनता है। लखनऊ के उस युवक ने महर्षि दयानन्द जी के विषपान व कर्नल प्रतापसिंह पर एक प्रश्न पूछ लिया। उसे बताया गया कि डी.ए.वी. कालेज कमेटी के एक पूर्व प्रधान ला. दीवानचन्द जी का लम्बे समय तक प्रतापसिंह से सम्पर्क व सम्बन्ध रहा। मेल मिलाप भी रहा। महर्षि को विष दिये जाने की घटना का वर्णन करते हुए ला. दीवानचन्द जी को यह कटु सत्य लिखना पड़ा, "डॉ. अलीमर्दान खाँ की चिकित्सा होती रही और रोग बढ़ता गया। दिन में कई बार मूर्छा हो जाती। करवट लेने को दूसरे की सहायता की आवश्यकता पड़ने लगी। दर्द बहुत सख्त था, और मुँह में और शरीर पर छाले पड़ने लगे। यह अवस्था एक सप्ताह तक जारी रही।

"महाराजा प्रतापसिंह और राव राजा तेजसिंह स्वामी जी के स्थान तक न पहुँचे।"

सत्य को छिपाने की कला के कलाकारों ने कभी डा. दीवानचन्द के इन वाक्यों को उद्धृत ही नहीं किया। प्रताप सिंह की क्रूरता पर पर्दा डालना ही कुछ लोगों का धर्म कर्म रहा है। प्रश्न आया तो हमने यह साक्षी दे दी।

**विचित्र शंका समाधान:**- श्री स्वामी विवेकानन्द जी रोजड़ का शंका समाधान पढ़ सुनकर कुछ स्वाध्याय प्रेमी उनके समाधान पर भी प्रश्न उठाते हैं। उन पर कुछ टिप्पणी करने को कई कारणों से टाल देना उचित जाना। वह दर्शनों के पण्डित हैं अत: उन्हीं से उनके समाधान पर प्रश्न पूछने का परामर्श देना ठीक लगा। अब बहुत कहा गया तो उनके दो विचारों पर कुछ निवेदन किया जाता है। पाठक तथा विद्वान् इस पर गम्भीरता से विचारें।

एक प्रश्न के उत्तर में गऊ को कसाई से बचाने के लिए असत्य कतई न बोलने और ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र को आपने न्यारा-न्यारा उपाय करने का उपदेश दिया है। किसी भी अवस्था में असत्य न बोलने का आपका उपदेश है। गुप्तचर विभाग में कार्यरत व्यक्ति देश की रक्षा करने में लगे रहते हैं। वे झूठ बोलकर क्या पाप करते हैं? पं. रुचिराम जी ने श्याम भाई का शव क्या सत्य बोल कर प्राप्त किया। वीर भगतसिंह ने साण्डर्स को मारा तो पुलिस ने पं. भगवद्दत्त जी, पं. रामगोपाल जी वैद्य तथा ठाकुर अमरसिंह से पूछा, वे गोली चलाकर किधर को भागे? तीनों ने कहा, हमने तो किसी को इधर से भागते देखा ही नहीं। क्रान्तिकारी पुलिस के हाथ नहीं आए। क्या ये तीन असत्य बोलने के कारण पापी माने जायें?

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने शाही किला में जाँच करने वालो को कहा, "मैं भापडोद की पंचायत में आने वाले किसी भी व्यक्ति का नाम नहीं जानता।" वे जिसका भी नाम बताते सरकार उसे यातनायें देती। स्वामी जी ने झूठ बोलकर इतिहास बनाया। इसे आप पाप मानेंगे क्या?

रोजड़ में छपे एक बड़े ग्रन्थ में व उत्कृष्ट समाधान में मोक्ष प्राप्ति को ही सर्वोत्तम कर्म बताया गया है। जन्म लेने से दु:ख भी भोगना पड़ता है सो जन्म लेना कोई बुद्धिमत्ता का कर्म नहीं। इस आशय के वाक्य इस लेखक ने कई बार पढ़ें हैं। मोक्ष का महत्त्व सब जानते हैं परन्तु यह मत भूलिए कि ऋषि के पत्र-व्यवहार में ही समाधि का आनन्द

छोड़कर लोकोपकार, वेद-प्रचार के लिए समर्पित होने की चर्चा पढ़ लीजिये। ऋषि दूसरों के बन्धन काटने के लिए बार-बार नरजन्म पाने की घोषणा या कामना करते हैं। ध्यान से ऋषि जीवन का पाठ कीजिये, मनन कीजिये। रोजड़ के कई महात्मा मोक्ष विषयक एकाङ्गी विचार देते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने प्राणोत्सर्ग से पूर्व धर्म प्रचार जाति रक्षा के लिए फिर से नर-जन्म पाने की कामना व्यक्त की थी। क्या यह वेद-विरुद्ध माना जावे?

शंका समाधान करते समय ऋषि के पत्र-व्यवहार तथा जीवन-चरित्र का भी गम्भीर ज्ञान होना चाहिये। वेद के सिद्धान्तों को, वैदिक दर्शन को समझने के लिए इनका भी उतना ही महत्त्व है जितना अन्य आर्ष ग्रन्थों का है। बुद्धि-भेद पैदा करने से हानि ही होगी। संगति का लगाना बहुत आवश्यक है।

**'इतिहास प्रदूषण' पर आक्षेप:-** एक लम्बे समय से आर्य समाज में इतिहास प्रदूषण के महारोग और आन्दोलन को गम्भीरता से जाना, समझा फिर इस नाम से एक पुस्तक लिखी। एक-एक बात का प्रमाण दिया। अपनी प्रत्येक पुस्तक के प्राक्कथन में यह लिखना इस लेखक का स्वभाव बन गया है कि यदि जाने, अनजाने से, अल्पज्ञता से, स्मृति दोष से पुस्तक में कोई भूल रह गई हो तो गुणियों के सुझाने पर अगले संस्करण में दूर कर दी जावेगी। परोपकारी में कई बार स्मृति दोष से किसी लेख में पाई गई भूल पर निसंकोच खेद प्रकट किया। यह पता ही था कि इस पुस्तक पर खरी-खरी लिखने पर भी कुछ कृपालु कोसेंगे, खीजेंगे। उनका तिलमिलाना स्वभाविक ही है। कुछ लोगों ने निर्भय होकर स्वप्रयोजन से आर्य समाज के इतिहास को प्रदूषित किया है।

दर्शाई गई किसी भूल, गड़बड़, मिलावट, बनावट व गड़बड़ को तो कोई झुठला नहीं सका। लेखक की दो भूलों को खूब उछाला जा रहा है। सोच-सोच कर हमारे परम कृपालु भावेश मेरजा जी ने एक प्रश्न भी पूछा है सेवा का एक अवसर देने पर अपने बहुत प्यारे भावेश जी का हृदय से आभार मानना हमारा कर्त्तव्य बनता है।

यह चूक आपने पकड़ी है कि देवेन्द्र बाबू के ग्रन्थ में भी एक स्थान पर प्रतापसिंह ने ऋषि से पूछा कि यदि आपको अली मरदान ने विष दिया हो तो......................

दूसरी चूक यह बताई गई कि भारतीय जी ने अपने ग्रन्थ में एक स्थान पर नन्हीं को वेश्या लिखा है। मेरा यह लिखना कि उन्होंने कहीं भी उसे वेश्या नहीं लिखा ठीक नहीं।

मेरा निवेदन है कि ये दोनों भूलें असावधानी से हो गई। इसका खेद है। दु:ख है। भूल स्वीकार है। प्राक्कथन में दिये आश्वासन को पूरा किया जाता है। क्या भावेश जी भी नैतिक साहस का परिचय दे कर पुस्तक में दर्शाई गई आपके महानायक की एक-एक भूल को स्वीकार कर इस पाप पर कुछ रक्तरोदन करेंगे? इतिहास प्रदूषण का दूसरा भाग भी अब छपेगा। उसमें महानायक जी के कुछ पत्र पढ़कर हमें कोसने वाले चौंक जायेंगे। बस प्रतीक्षा तो करनी पड़ेगी ।

प्रतापसिंह ने ऋषि से विष दिये जाने की बात कब की? यह तो बता देते। वह जोधपुर की राज परम्परा के अनुसार विष दिये जाने के २७ दिन के पश्चात् ऋषि से मिलने आया। तब ऋषि क्या होश में थे? मूर्छा का उल्लेख बार-बार मिलता है। प्रतापसिंह ने केवल ऋषि का हालचाल ही पूछा था। विष की कतई कोई चर्चा नहीं हुई। वह बस पूछताछ करके चला गया। ऋषि का पता पूछने जोधपुर तो राजपरिवार आया नहीं। ये सारी जानकारी देवेन्द्र बाबू व भारतीय जी ने पं. लेखराम जी के ग्रन्थ से ली है। वही सबका स्रोत है। विष की बात तो जोड़ी गई है। यह गढ़न्त है। पं. लेखराम जी ने एक - एक दिन की घटना तत्कालीन 'आर्य समाचार' मासिक मेरठ का नाम लेकर अपने ग्रन्थ में दी है। 'आर्य समाचार' का वह ऐतिहासिक अंक आज धरती तल पर केवल जिज्ञासु के पास है। उसके पृष्ठ २१३ पर प्रतापसिंह के दर्शनार्थ जाने का उल्लेख है। कोई बात हुई ही नहीं। हदीस गढ़ने वाला कोई भी हो, है यह हदीस। तब ठा. भोपाल सिंह व जेठमल तो वहीं थे। किसी ने कभी यह गढ़न्त न सुनाई । शेष चर्चा फिर करेंगे। जिसमें हिम्मत हो इसका प्रतिवाद करे।

**एक नया प्रश्न:-** भावेश जी इस समय अकारण आवेश में हैं। वह पूछते हैं यह कहाँ लिखा है कि माई भगवती लड़की नहीं बाल विधवा थी? श्रीमान् जी उत्तर

दक्षिण के आर्य व अन-आर्य समाजी तो छोटी-छोटी घटनायें इस सेवक से पूछते रहते हैं और आप पंजाब में कभी घर-घर में चर्चित माई जी के बारे में इस साहित्यिक कुली से ''कहाँ लिखा है?'' यह पूछते हैं।

महोदय हमने माई जी के साथ वर्षों कार्य करने वाले मेहता जैमिनि जी (आर्य समाज के G.O.M.), दीवान श्री बद्रीदास, ला. सलामतराय जी, महामुनि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, महाशय कृष्ण जी, पूज्य 'प्रेम' जी के मुख से सुना। महोदय माई जी का एक साक्षात्कार लिया गया था। उसकी स्कैनिंग करके छपवा दी। 'प्रकाश' में छपे उस साक्षात्कार में माई जी को साक्षात्कार लेने वाला 'माता भगवती' लिखता है। उनका कभी फोटो छपा देखा उस पर भी 'माई भगवती' शीर्षक था। पंजाब में माई लड़की को कोई नहीं कहता। माई का अर्थ माता या बूढ़ी ही लिया जाता है फिर भी कहाँ लिखा का हठ है तो थोड़ा आप ही हाथ पैर मारकर देखें। स्वामी श्रद्धानन्द जी के आरम्भिक काल का साहित्य देखें। 'बाल विधवा' शब्द न मिले तो फिर लेखक की गर्दन धर दबोच लेना। जैसे भारतीय जी ने 'कहाँ लिखा है' की रट लगाकर जब हड़कम्प मचाया था तो हमने 'लिखा हुआ' सब कुछ दिखा दिया था- आपको भी रुष्ट नहीं करेंगे। आप हमारे हैं, हम आपके हैं। आपको भी प्रसन्न कर देंगे।

**ताश के पत्ते या हिन्दू समाज?**:- टी.वी. में सुना, पत्रों में पढ़ा, श्रीमान् तोगड़िया जी की प्रतिक्रिया व समाधान भी सुन लिया। भारत में हिन्दुओं की जनसंख्या घट रही है। कभी एक गीत में लिखा था:- '**घट रही सन्तान तेरी, बढ़ रहे भगवान् तेरे**' ताश के पत्तों के सदृश हिन्दू वैसे ही बिखर रहा है। एकता के सूत्र में पिरोने को कुछ है ही नहीं। टी.वी. में सुन लो कई भगवानों की शरण में आने से दु:ख निवारण की बात कही जाती है। हर ज्योतिषी टी.वी. में प्रत्येक काम बनाने का उपाय बताता है। देश की कोई समस्या सुलझ नहीं रही। न्यारे-न्यारे तीर्थों पर कामनायें पूर्ण करवाने के लिये यात्रायें निकल रही हैं। सिख एकेश्वरवाद की बात करते थे वे भी अब धामों की यात्राओं से सब कुछ पाने की घोषणायें करते हैं। राम छूटा, कृष्ण छूटा अब तो नये-नये भगवानों को हिन्दू माला माल कर रहे हैं। किसी भी अंधविश्वास पाखण्ड के विरुद्ध हिन्दुत्व की रट लगाने वाले एक शब्द नहीं कहते । कोई यह नहीं कहता ईश्वर एक है और सर्वत्र हैं। सत्यासत्य की कसौटी क्या है? वेद का नाम लेने से हिन्दुत्व भयभीत है। इतना भी तो कोई नहीं कहता कि मानव मात्र को वेद के पढ़ने सुनने का अधिकार है। योग-योग का शोर मचा दिया परन्तु, योग की परिभाषा नहीं कर पाये।

- **वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२२२६**

## लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

# योग–साधना शिविर

## दिनांक : २५ अक्टूबर से ०१ नवम्बर, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

### प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

**प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ**-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

**ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से ( वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा ) सर्वदा सुलभ रहते हैं।**

-संयोजक

## धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

**खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर**

**१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-09110400057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।**
**IFSC - IBKL0000091**

**२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
**IFSC - SBIN0007959**

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

## परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

## यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

## अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या स ूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०**

**वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।**

# "ईश्वर की सिद्धि में प्रत्याक्षादि प्रमाण सिद्ध नहीं है" - की समीक्षा

- डॉ. कृष्णपालसिंह

[वर्ष २०१३ में ऋषि - मेले के अवसर पर आयोजित वेद-गोष्ठी में प्रस्तुत एवं पुरस्कृत यह शोध लेख पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है।]

-सम्पादक

**बुद्धि जैन सिद्धान्त एक ही है पृथक् नहीं:-** महर्षि दयानन्द ने सर्वदर्शनसंग्रह, राजाशिव प्रसाद कृत 'इतिहास तिमिरनाशक' ग्रन्थ के आधार पर बौद्ध और जैन मतावलम्बियों को एक ही माना है। चाहे बौद्ध कहो, चाहे जैन कहो एक ही बात है। एतद्विषयक कुछ सन्दर्भ प्रस्तुत हैं। राजा शिवप्रसाद जो जैन मत के अनुयायी और महर्षि के घोर विरोधी थे। उन्होंने अपने ग्रन्थ 'इतिहासतिमिरनाशक' में लिखा है, कि इनके दो नाम हैं, एक जैन और दूसरा बौद्ध। ये पर्यायवाची शब्द हैं। परन्तु बौद्धों में वाममार्गी मद्यमांसाहारी बौद्ध हैं उनके साथ जैनियों का विरोध है परन्तु जो महावीर और गौतमगण धर हैं उनका नाम बौद्धों ने बुद्ध रखा है और जो जैनियों ने गणधर और 'जिनवर' इसमें इनकी परम्परा जैन मत है।[१] इसी ग्रन्थ के तृतीय भाग में राजा शिवप्रसाद ने लिखा है कि स्वामी शंकराचार्य से पहले जिनको हुए कुल एक हजार वर्ष के लगभग गुजरे हैं सारे भारतवर्ष में बौद्धों अथवा जैन मत (धर्म) फैला हुआ था, इस पर नोट:- बौद्ध कहने से हमारा आशय उस मत से है जो महावीर के गणधर गौतम स्वामी के समय से शंकर स्वामी के समय तक वेदविरुद्ध सारे भारत वर्ष में फैल रहा था और जिसको अशोक सम्प्रति महाराज ने माना उससे जैन बाहर किसी तरह नहीं निकल सकते। 'जिन' जिससे जैन निकला और बुद्ध जिससे बौद्ध निकला दोनों पर्यायवाची शब्द हैं, कोश में दोनों का अर्थ एक ही लिखा है और गौतम को दोनों ही मानते हैं, वर्ना दीपवंश इत्यादि पुराने बौद्ध ग्रन्थों में शाक्य मुनि गौतम बुद्ध को अक्सर महावीर ही के नाम से लिखा है। उनके समय में एक उनका मत रहा होगा। हमने जो जैन न लिखकर गौतम के मत वालों को बुद्ध लिखा उसका प्रयोजन केवल इतना ही है कि उनको दूसरे देशवालों ने बौद्ध ही के नाम से लिखा है।[२] अमरकोश कार अमरसिंह ने भी अपने ग्रन्थ में ऐसा ही लिखा है।

**सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः।**
**समन्तभद्रो भगवान।।**[३]

स्वामी वेदानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के १२वें समुल्लास के ऊपर एक टिप्पणी में लिखा है कि 'वैदिक धर्म के विरोध में उठे ये सम्प्रदाय मनुष्यों को ईश्वर मानने के कारण एक हैं। बौद्धों ने परमेश्वर की सत्ता को अस्वीकार तो किया किन्तु उसके स्थान में बुद्ध को लोकनाथ (परमेश्वर) तथा सर्वज्ञ मानकर उसकी उपासना आराधना करने लगे। जैन भी ईश्वर को न मान ऋषभदेव आदि २४ तीर्थकरों को सर्वज्ञ मान कर उनकी पूजा अर्चना करते हैं। यतः बुद्ध तथा जिन वर्तमान में जब इनको उपास्य मानने की भावना का उदय हुआ प्रत्यक्ष नहीं है, अतः उनकी मूर्ति बनाकर पूजा प्रचलित हुई।'

ईश्वर को मानने वाले जो-जो गुण ईश्वर में मानते हैं, उन-उन सबका आरोप जैन, बौद्धों ने अपने सादि आराध्यों में किया। दोनों ने अपने -अपने आराध्यों को समन्तभद्र, अर्थात् सब प्रकार से निर्दोष कहा है किन्तु बुद्ध तथा महावीर रोगाक्रान्त हुए। रोगाक्रान्त दोष का भूल का फल है। अतः जहाँ उनके 'समन्तभद्र' पने का निरास होता है, वहाँ उनके सर्वज्ञ होने का भी खण्डन हो जाता है।[४] ........स्वामी वेदानन्द जी ने ब्र. शीतलप्रसाद जैन जो दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान् हैं उनकी 'जैन बौद्धतत्वज्ञान' नामक पुस्तक के अनेक उदाहरण देते हुए लिखा है कि जहाँ तक मैंने बौद्धों व निर्वाण और निर्वाण के मार्ग का अनुभव करके विचार किया तो उसका बिल्कुल मेलान जैनियों के निर्वाण और निर्वाण के मार्ग से हो जाता है.....हमें तो ऐसा अनुमान होता है कि जैसे जैनों में एक सिद्धान्त मानते हुए भी दिगम्बर व श्वेताम्बर दो भेद पड़ गये उसी तरह श्री महावीर स्वामी के समय में ही वस्त्र सहित साधु चर्या स्थापित करने से बौद्ध संघ जैन संघ से पृथक् होगया।.........हमारी राय में जैन व बौद्ध में कुछ भी अन्तर नहीं है।[५] चाहे बौद्ध धर्म प्राचीन कहें या जैन धर्म प्राचीन कहें एकही बात है।......गौतम बुद्ध ने साधु मात्र की चर्या सुगम की, सिद्धान्त वही रखा।.......इस तरह जैन तत्व ज्ञान में समानता है।[६]

उपर्युक्त दीर्घ चर्चा करने का हमारा उद्देश्य इतना ही है कि ये दोनों सम्प्रदाय एक ही हैं, भिन्न नहीं। अत: चाहे बौद्ध कहो या चाहे जैन कहो कोई भेद नहीं है। इन्होंने प्रत्यक्ष अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति तथा अनुपलब्धि रूप छ: (६) प्रमाणों के आधार पर ईश्वर की असिद्धि करने का यत्न किया। परन्तु आचार्य उदयन ने स्वरचित न्यायकुसुमाञ्जलि के तृतीय स्तवक में इनके विचारों का प्रबल प्रत्यख्यान किया है। आचार्य विश्वेश्वर ने उक्त ग्रन्थ की टीका स्पष्ट एवं अति सरल संक्षिप्त रूप में की है। इस लेख में उनके विचारों का पुष्कल मात्रा में उपयोग किया गया है। महर्षि दयानन्द ने भी १२ वें समुल्लास में इनके विचारों तथा इनके सिद्धान्त, ग्रन्थों का उद्धरहण देते हुए सटीक समीक्षा की है। उन्होंने लिखा है कि 'जिसलिये हम इस समय परमेश्वर को नहीं देखते इसलिये कोई सर्वज्ञ अनादि परमेश्वर प्रत्यक्ष नहीं है, जब ईश्वर में प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं तो अनुमान भी नहीं घट सकता, क्योंकि एकदेश प्रत्यक्ष के बिना अनुमान नहीं हो सकता जब प्रत्यक्ष, अनुमान नहीं तो आगम अर्थात् नित्य अनादि सर्वज्ञ परमात्मा का बोधक शब्द प्रमाण भी नहीं हो सकता। जब तीनों प्रमाण नहीं तो अर्थवाद अर्थात् स्तुति -निन्दा-परकृति अर्थात् पराये चरित्र का वर्णन और पुराकल्प अर्थात् इतिहास का तात्पर्य भी नहीं घट सकता। और अन्यार्थ प्रधान अर्थात् बहुब्रीहि समास के तुल्य परोक्ष परमात्मा की सिद्धि का विधान नहीं हो सकता। पुन: ईश्वर के उपदेष्टाओं से सुने बिना अनुवाद भी कैसे हो सकता है।'[७]

सत्यार्थ प्रकाश के उपर्युक्त सन्दर्भ में छ: (६) प्रमाणों द्वारा ईश्वर की सत्ता का निषेध किया गया है। महर्षि ने उसका समाधान उसी दार्शनिक परिपेक्ष में किया है। परन्तु हम यहाँ पर न्यायकुसुमाञ्जलि के तृतीय स्तवक के आधार पर समीक्षा करने का प्रयास करेंगे।

**ईश्वर की अभावसिद्धि में अनुपलब्धि की समीक्षा:-**

**इहभूतले घटाभाव वदीश्वर स्याप्यनुपलब्धे:**
**अभावस्य ग्रहात्।**[८]

अर्थात् इस भूतल में घटाभाव के समान ईश्वर की अनुपलब्धि से उसका भी अभाव ग्रहण होने से ईश्वर नहीं है। तात्पर्य यह है कि भूतल में घटाभाव जैसे अनुपलब्धि से सिद्ध होता है वैसे ही ईश्वर के प्रत्यक्ष न होने से उसका भी अनुपलब्धि से अभाव ग्रहण नहीं होता तो प्रत्यक्ष के अयोग्य 'शशशृण्ङ्ग का भी अभाव सिद्ध नहीं होगा।[९] इस पूर्वपक्ष के समाधान में आचार्य उदयन का कहना है कि 'प्रत्यक्ष के अयोग्य परमात्मा में योग्यनुपलब्धि कहाँ घटता है? जिससे ईश्वर का अभाव सिद्ध हो। और जो अनुपलब्धि पाई जाती है वह केवल अनुलब्धि रूप से अभाव साधिका नहीं है अन्यथा बौद्धाभिमत आकाश, धर्माधर्म आदि अप्रत्यक्ष पदार्थों का भी लोप हो जायेगा। अत: अनुपलब्धि मात्र से ईश्वर का अभाव सिद्ध नहीं होता है। और आपने जो यह कहा है कि योग्यानुपलब्धि को अभाव साधिका का मानने पर प्रत्यक्ष के अयोग्य होने से शशशृङ्ग का अभाव अनुपलब्धि से सिद्ध नहीं होगा । आपका यह प्रतिबन्ध भी कहाँ बनता है? क्योंकि प्रत्यक्ष के अयोग्य (शश) श्रृङ्ग का बाध हम कहाँ करते हैं, हम तो शृङ्ग में शशीयत्व, शशसम्बन्ध का निषेध करते हैं, शशशृङ्ग नामक पदार्थ का निषेध नहीं करते हैं। श्रृङ्ग प्रत्यक्ष के योग्य ही है।[१०]'

अभिप्राय यह है कि अनुपलब्धि अभाव साधिका नहीं है अपितु प्रत्यक्ष योग्यानुपलब्धि अर्थात् प्रत्यक्ष योग्य पदार्थ की अनुपलब्धि उसकी अभाव साधिका है। यहाँ यह भी जानना चाहिये कि केवल अनुपलब्धि को यदि अभाव साधिका मान लिया जायेगा तब तो बौद्धाभिमत आकाश धर्माधर्म आदि पदार्थ भी दिखाई न देने के कारण अनुपलब्धि मात्र से अभाव सिद्ध हो जायेगा। परन्तु बौद्ध इन पदार्थों की सत्ता मानते हैं। इस कारण अनुपलब्धिमात्र को अभाव साधिका नहीं माना जा सकता अपितु योग्यानुपलब्धि ही अभाव साधिका है।

'प्रत्यक्षयोग्य परमात्मा में योग्यानुपलब्धि कहाँ है, वही बाधिका है और जो केवल अनुपलब्धि मात्र पाई जाती है, वह अभाव साधिका मान लिया जाय तो बौद्धाभिमत आकाश, धर्माधर्म आदि का विलोप हो जायेगा।'

आकाशादि अप्रत्यक्ष अर्थों का भी अभाव मानना होगा, जो बौद्ध को अभिमत नहीं है। योग्यानुपलब्धि को अभाव साधक मानने में शशशृङ्ग का भी अभाव सिद्ध नहीं होगा यह जो प्रतिबन्ध दिया है उसका भाव अगर यह है कि हम प्रत्यक्ष के अयोग्य शशशृङ्गनामक किसी पदार्थ का निषेध नहीं करते हैं अपितु शशरूप आधार में प्रत्यक्ष योग्य श्रृङ्ग के संयोग सम्बन्ध का निषेध करते हैं। श्रृङ्ग तो प्रत्यक्ष के योग्य ही है इसलिये प्रतिबन्ध नहीं बन सकता। अयोग्य श्रृङ्ग का निषेध नहीं करते हैं। तब उसकी सत्ता सिद्ध हो जायेगी यह शंका नहीं करनी चाहिए क्योंकि उसके विषय में साधक प्रभावों का अभाव ही है। इसलिये

अनुपलब्धि ईश्वर के अभाव को सिद्ध नहीं करता। इस पर बौद्ध ने ईश्वर के अभाव सिद्धि के लिये एक अन्य अनुमान प्राप्त किया कि 'ईश्वर: न क्षित्यादिकर्त्ता शरीर सम्बन्ध भावात प्रयोजना भावात च'[१०] अर्थात् ईश्वर क्षित्यादिका न कर्त्ता हैं क्योंकि शरीर सम्बन्ध का अभाव होने से प्रयोजन के न होने के कारण। इस अनुमान वाक्य का अभिप्राय यह है कि परमात्मा के प्रत्यक्ष योग्य होने से उसकें क्षिति कर्तृत्वादि कर्म भी प्रत्यक्ष के अयोग्य हैं। यहाँ जो अनुमान प्रयुक्त किया गया है उसका आधार शरीर सम्बन्ध और प्रयोजन ये दो कर्तव्य के व्यापक धर्म हैं।

**'यत्र यत्र कर्तृत्व तत्र तत्र शरीर सम्बन्ध:प्रयोजन च'**[११] अर्थात् जहाँ जहाँ कर्त्ता होता है वहाँ वहाँ शरीर युक्त अवश्य होता है। और उस कार्य के करने में उसका कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होता है। परन्तु ईश्वर न शरीरी है और न ही सृष्टि के निर्माण में उसका अपना कोई स्वार्थ अथवा कारुण्यरूप प्रयोजन ही है। यदि उसका कोई स्वार्थ है तो वह पूर्ण काम नहीं रहेगा। अन्य आत्माओं के उद्धार की कारुण्य भावना इसलिये नहीं बनती है कि दु:खी प्राणी को देखने के बाद ही करुणा हो सकती है, उसके पूर्व नहीं। दु:ख संसार काल में ही हो सकता है अतएवं करुणा भी संसार काल में ही हो सकती है, सृष्टि की उत्पत्ति के पूर्व नहीं।[१२] इसलिए सृष्टि निर्माण में उसका कोई प्रयोजन भी नहीं है और शरीर सम्बन्ध भी नहीं हैं। अत: ईश्वर सृष्टिकर्ता नहीं हो सकता यह बौद्धों का पक्ष है।

इस पर नैयायिक आचार्य उदयन का कहना है कि बौद्धों ने जो अनुमान दिया है जिसे हम पहले भी दिखा चुके हैं विषय स्पष्टीकरणार्थ पुन: प्रस्तुत करने में कोई आपत्ति नहीं है-

**ईश्वर: न क्षित्यादिकर्त्ता शरीरसम्बन्धावात् प्रयोजनाभावात् च।**[१३]

इस अनुमान वाक्य में ईश्वर पक्ष या आश्रय है, जब वही सिद्ध नहीं है तो यह हेतु 'आश्रयासिद्ध हेत्वामास' होने से साध्य को सिद्ध नहीं कर सकता है।[१४]

**आश्रयासिद्ध हेत्वाभास:-** इस हैत्वाभास को समझाने के लिये हेत्वाभास पद का अर्थ जानना भी आवश्यक है। **'हेतुवद् आभासते इति हेत्वाभास:'** जो हेतु के समान भासित होता है वस्तुत: दोषयुक्त होने के कारण हेतु नहीं होता उसे हेत्वाभास कहते हैं। प्रकृत हेत्वाभास असिद्ध हेत्वाभास का एक वर्ग है। यह तीन प्रकार का होता है। (१) आश्रय सिद्ध (२) स्वरूपासिद्ध (३) व्याप्यत्वासिद्ध। प्रकृत स्थल पर आश्रयसिद्ध हेत्वाभास की ही चर्चा करेगें क्योंकि पूर्व पक्ष ने जो अनुमान दिया है वह आश्रयासिद्ध हेत्वाभास के अर्न्तगत आता है। इस का लक्षण है **'आश्रयासिद्धो यथा, गगतारविन्दं सुरभि: अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्। अत्र गगनारविन्दं आश्रय सच नास्त्येव।**[१५]**'**

जैसे आकाश कमल सुगन्धित होता है। यह प्रतिज्ञा क्योंकि वह कमल अथवा उसमें कमलत्व है (यह हेतु) सरोज में उत्पन्न कमल के समान (उदाहरण) यहाँ आकाश कमल आश्रय है वह होता ही नहीं है। बौद्धों ने जो अनुमान वाक्य दिया उसमें ईश्वर पक्ष या आश्रय हैं, जब वही सिद्ध नहीं है, इसलिये यह हेतु आश्रयासिद्ध हेतवाभास होने से साध्य को सिद्ध नही कर सकता है और यदि आश्रय सिद्धि से बचने के लिए ईश्वर की सत्ता मान लें तो जिस प्रमाण से उसकी सत्ता मानेंगे उसी धार्मिक ग्राहक प्रमाण से उसका क्षित्यादि कर्तव्य भी सिद्ध हो जायेगा। उस स्थिति में यह हेतु बाधित विषयत्व हेत्वाभास हो जायेगा। अत: एव दोनों प्रकार के हेत्वाभास होने से शरीर सम्बन्ध भावात् हेतु ईश्वर के अभाव का साधक नहीं हो सकता है।[१६]

**मिथ्याज्ञानवश ईश्वर की मान्यता:-** अब बौद्ध यह कहते हैं कि कुछ लोग मिथ्या ज्ञानवश ईश्वर को मानते हैं, उसका यह मिथ्याज्ञान, या भ्रम या असत्ख्याति कहलाता है। इस असत्ख्याति से ईश्वरवाद जिस परमात्मा को मानते हैं, उनको पक्ष बनाकर **'ईश्वर: न क्षित्यादिकर्त्ता शरीर सम्बन्धाभावात् प्रयोजनाभावात् च'** यह अनुमान प्रस्तुत करते हैं अथवा **'ईश्वरो नास्ति शरीरसम्बन्धाभावात् प्रयोजनाभावात्च'**[१७] यह अनुमान किया जा सकता है।

इसके समाधान में आचार्य उदयन का कहना है कि पहले अनुमान वाक्य में ईश्वर के कर्तव्य का अभाव सिद्ध किया जा रहा है। (**क्षित्यादिकर्तृत्वाभाववानीश्वर:**) उसमें ईश्वर विशेष्य और क्षित्यादि कर्तृत्वाभाव उसका विशेषण है। जबकि दूसरे अनुमान में **'ईश्वर नास्ति'** में ईश्वर का अभाव प्रदर्शित किया जा रहा है। **'यस्याभाव स तस्य प्रतियोगी इति नियमात्'** इस नियम के अनुसार जिसका अभाव होता है वह उस अभाव का प्रतियोगी कहलाता है। अत: ईश्वर अभाव का प्रतियोगी है, 'विशेषता' और 'प्रतियोगिता' दोनों ऐसे धर्म है जो किसी यथार्थ वस्तु में ही

रह सकते हैं, मिथ्या या असत्ख्याति से सिद्ध वस्तु में नहीं रह सकते क्योंकि विशेष्यता का अर्थ वियोषणाश्रयता है, यह आश्रयता अभाव पदार्थ में नहीं रह सकती है और प्रतियोगिता अभाव विरोधी भावरूप ही होती है। अत: एवं प्रतियोगिता भी वस्तु में ही रह सकती है। इसलिये असत्ख्याति से उपनीत ईश्वर न तो विशेष्य हो सकत है और न ही प्रतियोगी । अत: ईश्वर के अभाव साधक दोनों अनुमान नहीं बन सकते।[१८]

**योग्यानुपलब्धि ही अभावसाधिका है अनुपलब्धिमात्र नहीं:-** जैसा कि हम यह बात पहले भी कह चुके हैं कि योग्यानुपलब्धि को अभाव साधिकमान से शशशृङ्ग का भी अभाव सिद्ध नहीं होगा क्योंकि वह प्रत्यक्ष के योग्य नहीं है, यह प्रतिबन्धक कहा गया है। यह पूर्वपक्ष का विचार है। अब सिद्धान्त पक्ष का इस विषय में यह कहना है कि हम अयोग्य शशशृङ्ग का अभाव सिद्ध नहीं करते हैं अपितु प्रत्यक्षयोग्य शृङ्ग का शश के साथ सम्बन्ध का निरास करते हैं, और शशशृङ्ग का निषेध न करने से उसका भाव सिद्ध नही हो सकता है क्योंकि उसका साधक कोई प्रमाण है ही नहीं। यदि आप शशशृङ्ग भी प्रत्यक्ष के योग्य है, और उसकी अनुपर्लाब्ध योग्यानुपलब्धि ही है। अब यह प्रश्न उठता है कि यदि शशशृङ्ग प्रत्यक्ष के योग्य है तो उसका प्रत्यक्ष भी होना चाहिए, पर प्रत्यक्ष होता नहीं है। इस आशंका का समाधान करते हुए आचार्य उदयन का कहना है कि हाँ- जब उसके प्रत्यक्ष की सामग्री होगी तब उसका प्रत्यक्ष अवश्य होगा और यदि प्रत्यक्ष नहीं होता है तो यह मानना होगा कि उसके प्रत्यक्ष की सामग्री ही नहीं है। शशशृङ्ग के प्रत्यक्ष की सामग्री दोषयुक्त इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष आदि हैं। जैसे पीलिया रोग के रोगी को (पीत: शङ्ख) की प्रतीति होती है। यहाँ इस प्रतीति में पित्तादि दोषयुक्त नेत्र कारण होते हैं। एवमेव शशशृङ्ग के प्रत्यक्ष में भी दुष्ट अर्थात् दोष धरित प्रत्यक्ष, सामग्री होगी और उस सामग्री के होने पर शशशृङ्ग का भी प्रत्यक्ष हो सकता है। इसलिये शशशृङ्ग भी प्रत्यक्ष के योग्य हैं उसका अभाव योग्यानुपलब्धि से सिद्ध हो सकता है।[१९] इस समीक्षा का निष्कर्ष यह है कि योग्यानुपलब्धि ही अभाव साधिका है, अनुपलब्धिमात्र नहीं।

**आत्मा को पक्ष बनाकर बौद्धानुमान ईहा:-** इसके बाद अब बौद्ध आत्मा को पक्ष बनाकर अनुमान प्रस्तुत करने की ईहा (चेष्टा) करता है कि '**आत्मा न सर्वज्ञ: आत्मत्वात्**' अथवा '**आत्मा नक्षित्यादि कर्त्ता आत्मवात् अस्मदादिवत्**'[२१] यह अनुमान प्रतिपादित किया है। इस अनुमान विषय पर आचार्य उदयन का कहना है कि पूर्व पक्षी बौद्ध किस आत्मा को पक्ष बनाकर यह अनुमान प्रदर्शित किया है। प्रसिद्ध आत्मा को अर्थात् जीवात्मा को अथवा अप्रसिद्धात्मा अर्थात् परमात्मा को यदि जीवात्मा को पक्ष बनाया गया है तो सिद्ध साधन या इष्टसिद्धि है, क्योंकि हम भी जीवात्मा को सर्वज्ञ या क्षित्यादि का कर्त्ता नहीं मानते हैं। और यदि अप्रसिद्ध आत्मा अर्थात् परमात्मा को पक्ष बनाया गया है तो उसके सिद्ध न होने से आश्र या सिद्धि हेत्वाभास तो पूर्ववत् है ही उसके अतिरिक्त 'हेत्वसिद्धि अर्थात् स्वरूपासिद्धि भी हो जायेगी। पक्ष वृत्तिहोन हेतु का ज्ञान अनुमान का प्रयोजक होता है वह यहाँ पक्ष के न होने से पक्षवृत्तित्व विशिष्ट हेतु का ज्ञान भी अभाव होने से हेतु सिद्धि भी होगी।[२२]'

एवमेव बौद्धों द्वारा ईश्वर के निरासार्थ अनेक प्रमाणों, अनुमानों का प्रयोग किया गया परन्तु उन सभी अनुमानों में आश्रय सिद्धि या स्वरूपा सिद्धि हो जाने से अभीष्ट सिद्धि न हो पाई है। आचार्य उदयन ने यह सिद्ध किया कि अनुपलब्धि तथा अनुमान इन दोनों प्रमाणों से ईश्वर का अभाव सिद्ध करने का प्रयास उनका असफल रहा क्योंकि अनुपलब्धि का अभाव सही मानने में तो आकाश, धर्माधर्मादि का भी विलोम हो जाता है जो बौद्ध को मान्य नहीं है। ये नित्य आत्मा तथा ईश्वर की सत्ता को तो नहीं मानते परन्तु आकाश, धर्माधर्मादि का अस्तित्व मानते हैं। इसलिये अनुपलब्धि को अभाव साधिका मानने से तो उक्त पदार्थों का निषेध होने लग जाता है तो बौद्ध भयभीत हो उठता है। इसी प्रकार अनुपलब्धि को अभाव साधिका मान लेने पर अनुमान प्रमाण का कोई उपयोग नहीं रहता है और उसके अनुमान का भी लोप हो जाता है, यह भी बौद्ध को अभीष्ट नहीं है क्योंकि बौद्ध प्रत्यक्ष के अतिरिक्त अनुमानादि प्रमाण को मानता ही नहीं है। और जब आकाश, धर्माधर्मादि और अनुमान के लोप का अवसर आता है तब वह चुप हो जाता है फलस्वरूप वह अनुपलब्धि को अभाव साधिका भी नहीं मान सकता है। वस्तुत: यह उसके सिद्धान्त की बहुत बड़ी कमजोरी है इस कारण वह ईश्वर का अभाव सिद्ध करने में असमर्थ रहा है।

**प्रत्यक्ष प्रमाण से ईश्वर सिद्धि:-** महर्षि दयानन्द प्रत्यक्ष प्रमाण से ईश्वर की सिद्धि करना अभीष्ट मानते हैं।

वह यह जानते थे कि चार्वाक, जैन बौद्धादि नास्तिक मतानुयायी ईश्वर विषय में ईश्वर प्रत्यक्ष दिखाने पर बल देते हैं। परन्तु प्रत्यक्ष भी दो प्रकार का है। १. बाह्य प्रत्यक्ष २. आभ्यन्तर प्रत्यक्ष प्रथम कोटि का प्रत्यक्ष चक्षुरादि इन्द्रिय जन्य होता है जो ईश्वर में नहीं घटता है क्योंकि ईश्वर सर्वातिसूक्ष्म होने के कारण चक्षुरादि स्थूल इन्द्रियों का विषय नहीं है। दूसरा अभ्यन्तर प्रत्यक्ष है जो आत्मा द्वारा ही परमात्मा का साक्षात्कारात्मक ज्ञान प्राप्त करता है। जैसा कि प्राचीन ऋषियों ने आत्मा के द्वारा आत्मा (परमात्मा) को प्रत्यक्ष किया। इसलिये महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम पृष्ठ पर लिखा '**नमो ब्राह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मवदिष्यामि**'[२३]

सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास जिसमें ईश्वर विषय तथा वेद विषय का निरूपरण किया है। इसमें ही ईश्वर सिद्धि के विषय में पूर्व प्रश्न उठाते हुए लिखा है कि 'आप ईश्वर ईश्वर कहते हो उसकी सिद्धि किस प्रकार करते हो? (उत्तर) सब प्रत्यक्षादिप्रमाणों से (पूर्व) ईश्वर में प्रत्यक्षादिप्रमाण कभी नहीं घट सकते (उत्तर) **इन्द्रियान सन्निकर्षोत्पन्न ज्ञानं अव्ययदेश्यं अव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्।**' यह गौतम महर्षि कृत न्याय दर्शन (१/१/४) का सूत्र है। जो श्रोत्रत्व चक्षु, जिह्वा, घ्राण और मन का शब्द, स्पर्श रूप, रस, गन्ध, सुख, दु:ख, सत्य और असत्य विषयों के साथ सम्बन्ध होने से जो ज्ञान उत्पन्न होता है, उसको प्रत्यक्ष कहते हैं, परन्तु वह निर्भ्रम हो। अब विचारना चाहिये कि इन्द्रियों और मन से गुणों का प्रत्यक्ष होता है गुणी का नहीं । जैसे चारों त्वचा आदि इन्द्रियों से स्पर्श, रूप, रस, गन्ध का ज्ञान होने से गुणी पृथिवी उसका आत्मयुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है वैसे इस प्रत्यक्ष के होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है। जब आत्मा मन और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता है वा चोरी आदि बुरी व परोपकार आदि अच्छी बाते करने में जिस क्षण में आरम्भ करता है उस समय जीव की इच्छा ज्ञान आदि उसी इच्छित विषय पर झुक जाती है, उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे काम करने में अभय, नि:शंकता और आनन्दोत्साह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है। और जब जीवात्मा शुद्ध हो के परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है उसको उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते हैं। जब परमेश्वर का प्रत्यक्ष होता है तो अनुमानादि से परमेश्वर के ज्ञान होने में क्या सन्देह है? क्योंकि कार्य को देखकर कारण का अनुमान होता है। (पूर्व.) ईश्वर व्यापक है वा किसी देश विशेष में रहता है? (उत्तर) व्यापक है, क्योंकि जो एक देश में रहता तो सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ, सर्वनियन्ता सबका स्रष्टा, सबका धर्त्ता और प्रलय कर्त्ता नहीं हो सकता, अप्राप्तदेश में कर्त्ता की क्रिया का असम्भव है।[२४]

उपदेश मंजरी के प्रथम उपदेश में ही ईश्वर सिद्धि का विषय है। यहाँ पर महर्षि ने कहा कि प्रथम हमें ईश्वर की सिद्धि करनी चाहिए उसके पश्चात् धर्मप्रबन्ध का वर्णन करना योग्य है क्योंकि '**सति कुडये चित्रम्**' इस न्याय से जब तक ईश्वर की सिद्धि नहीं हो जाती तब तक धर्म व्याख्यान करने का अवकाश नहीं।[२५]

### क्या उपासनार्थ उपास्य के आकार की आवश्यकता है?:-

भक्त लोग प्राय: यह कहा करते हैं कि परमेश्वर की उपासना करने के लिए उसके आकार की आवश्यकता महसूस होती है। 'इसी प्रकार भक्तों को उपासना करने के लिये ईश्वर का कुछ आकार होना चाहिए, परन्तु यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि शरीरस्थ जो जीव है, वह भी आकार रहित है, यह सब कोई मानते हैं अर्थात् वैसा आकार न होते भी हम परस्पर एक दूसरे को पहचानते हैं, प्रत्यक्ष कभी न देखते हुए भी केवल गुणानुवादों ही से सद्भावना और पूज्यबुद्धि मनुष्यादि के विषय में रखते हैं। उसी प्रकार ईश्वर के सम्बन्ध में नहीं हो सकता, यह कहना ठीक नहीं है। इसके सिवाय मन का आकार नहीं है मन के द्वारा परमेश्वर ग्राह्य है, उसे जड़ इन्द्रिय ग्राह्यता लगाना यह अप्रयोजक है।'[२६] प्रमाण बहुत प्रकार के हैं यथा- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द.......परन्तु सब शास्त्रकार अपने शास्त्र के उपयोगी प्रमाण को मानते हैं। 'सारे प्रमाणों का अन्तर्भाव करके तीन प्रमाण अपशिष्ट रहते हैं-प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द। प्रत्यक्ष भी सविकल्प और निर्विकल्प होता है। अनुमान तीन प्रकार का होता है- पूर्ववत् शेषवत् और सामान्यतो दृष्ट। इन तीन प्रकार के प्रमाणों की व्यापिका ईश्वर सिद्धि विषयक प्रयत्न करते समय प्रत्यक्ष की व्यापिका (विचार) करने से पूर्व अनुमान की लापिका करनी चाहिये क्योंकि प्रत्यक्ष का ज्ञान बहुत संकुचित और शुद्र

हैं'.........इससे प्रत्यक्ष को एक ओर रखकर शास्त्रीय विषयों में अनुमान प्रमाण ही विशेष गिना गया है। व्यवहार के लिये अनुमान आवश्यक है। अनुमान के बिना भविष्य के व्यवहारों के विषय में हमारा जो दृढ़ निश्चय रहता है, वह निरर्थक होगा। कल सूर्य उदय होगा यह प्रत्यक्ष नहीं है तथापि इस विषय में किसी के मन में तिलमात्र की भी शंका नहीं होती।'[२७]

**अनुमान और प्रत्यक्ष से ईश्वर सिद्धि:-** 'तीन प्रकार के अनुमान की लापिक करने से ईश्वर= परमपुरुष= सनातन ब्रह्म सब पदार्थों का बीज है, ऐसा सिद्ध होता है। रचना रूपी कार्य दिखता है, इससे अनुमान होता है कि इस सृष्टि को रचने वाला अवश्य कोई है। पंच महाभूतों की सृष्टि आप ही आप रची हुई नहीं है, क्योंकि व्यवहार में घर का सामान विद्यमान होने ही से केवल घर नहीं बन जाता, यह हमारा देखा हुआ अनुभव सर्वत्र है। साथ ही साथ पंच महाभूतों का मिश्रण नियमित प्रमाण से विशिष्ट उत्पन्न होने की ही सुगमता के लिए कभी भी आप स्वयं घटित नहीं होता। इससे स्पष्ट है कि सृष्टि की व्यवस्था जो हम देखते हैं, उसका उत्पादक और नियंता ऐसा कोई श्रेष्ठ पुरुष अवश्य होना चाहिये।'[२८]

'अब किसी को यह अपेक्षा लगे कि ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्ष प्रमाण होना चाहिए, उसका विचार यूँ है कि प्रत्यक्ष रीति से गुण का ज्ञान होता है। गुण का अधिकरण जो गुणी द्रव्य है उसका ज्ञान प्रत्यक्ष रीति से नही होता। इसी प्रकार ईश्वर सम्बन्धी गुण का अधिकरण जो ईश्वर है उसका ज्ञान होता है, ऐसा समझना चाहिए।'[२९] '**हिरण्य गर्भः**' इस मन्त्र को प्रस्तुत करके लिखा है कि हिरण्यगर्भ का अर्थ शालिग्राम की वटिया नहीं है, किन्तु हिरण्य अर्थात् 'ज्योति जिसके उदर में है, वह ज्योति स्वरूप परमात्मा ऐसा अर्थ है।'

**यत्र नान्यत् पश्यति नान्यत् शृणोति नान्यत्विजानाति स भूमा यत्र अन्यत् पश्यति अयत् शृणोति, अन्यत् विजानति तत् अल्पभ।**

**यो वैभूमा तदमृतमथ यदलयं तन्मर्त्यं स भगवः कस्मिन्**

**प्रतिष्ठितः इति स्वे महिम्ति यदिवा न महिम्नीति।**[३०]

जब उपासक अन्य वस्तुओं को जानता नहीं। वह भूमा है। और जब उपासक अन्य वस्तु को देखता है। अन्य वस्तु को सुनता है। अन्य वस्तु को जानता है। वह अल्प है। जो भूमा है वही अमृत है। जो अल्प है वही मर्त्य मरण योग्य है। नारद- वह भूमा किसमें प्रतिष्ठित है? सनत्कुमार- निज महिमा में यह प्रतिष्ठित है।

**एतदालम्बनं श्रेष्ठ एतदालंवनं परम्।**

**एतदालंवनं ज्ञात्वा स ब्रह्म लेके महीयते।।**

## टिप्पणियाँ

१. सत्यार्थप्रकाश, पृ. ३८३
२. सत्यार्थप्रकाश, पृ. ३८३-३८४
३. अमरकोश ११८
४. सत्यार्थप्रकाश, १२वाँ समु., पृ. ३८४ पर स्वामी वेदानन्द की टिप्पणी
५. वही देखें, पृ. ३८४
६. वही देखें, पृ. ३८४
७. न्याय कुसुमांजलि, तृतीयस्तबक, पृ. १०१
८. वही देखें, पृ. १०१
९. न्याय कुसुमांजलि, पृ. १०१
१०. वही देखें, पृ. १०३
११. वही देखें, पृ. १०२
१२. वही देखें, पृ. १०२
१३. वही देखें, पृ. १०३
१४. वही देखें, पृ. १०३
१५. तर्कभाषा, पृ. १११
१६. वही देखें, पृ. १०३
१७. वही देखें, पृ. १०३
१८. वही देखें, पृ. १०४
१९. वही देखें, पृ. १०५
२०. वही देखें, पृ. १०६
२१. वही देखें, पृ. १०६
२२. सत्यार्थप्रकाश, प्रथम समु., पृथम पृथम पृष्ठ
२३. सत्यार्थप्रकाश, सप्तम समु., पृ. १५४-१५५
२४. उपदेश मंजरी, पृ. २
२५. वही देखें, पृ. ३
२६. उपदेश मंजरी, पृ. ३
२७. वही देखें, पृ. ४
२८. छान्दोग्योपनिषद् ७/२४/१

**- ई-१२८, गोविन्दपुरी, सोडाला, जयपुर, राज.**

---

यज्ञ आदि व्यवहारों के बिना गृहाश्रम में सुख नहीं होता।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५९**

# वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

## महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

## वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

| क्रमांक | नाम पुस्तक | मूल्य |
|---|---|---|
| | **वेद संहिताएँ– (केवल मन्त्र)** | |
| १. | ऋग्वेद संहिता (मूल) मन्त्र– | रु. |
| | वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया) | ६००.०० |
| २. | "यजुर्वेद संहिता"(मूल) मन्त्र | |
| | वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया) | १८०.०० |
| ३. | यजुर्वेद संहिता (मूल) सजिल्द (साधारण) | १००.०० |
| ४. | सामवेद संहिता (मूल) मन्त्र | |
| | वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया) | १६०.०० |
| ५. | अथर्ववेद संहिता (मूल) मन्त्र– | |
| | वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया) | ४००.०० |
| ६. | चतुर्वेद विषय सूची | ४०.०० |
| ७. | सामवेद के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका | २.०० |
| ८. | ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सजिल्द | १२०.०० |
| ९. | ऋग्वेद के प्रथम बाईस मन्त्रों का भाष्य | ५.०० |
| | **वेद भाष्य–(संस्कृत एवं हिन्दी, दोनों में भाष्य)** | |
| १०. | ऋग्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द) | १५०.०० |
| ११. | ऋग्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द) | २००.०० |
| १२. | ऋग्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द) | २००.०० |
| १३. | ऋग्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द) | १५०.०० |
| १४. | ऋग्वेदभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द) | २५०.०० |
| १५. | ऋग्वेदभाष्य छठा भाग (सजिल्द) | ३००.०० |
| १६. | ऋग्वेदभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द) | २००.०० |
| १७. | ऋग्वेदभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द) | २००.०० |
| १८. | ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल | |
| | प्रथम भाग सजिल्द | ७०.०० |
| १९. | ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल | |
| | द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि) | ६०.०० |

| क्रमांक | नाम पुस्तक | मूल्य |
|---|---|---|
| २०. | ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल | |
| | पहला भाग सजिल्द | |
| २१. | ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल | |
| | दूसरा भाग सजिल्द | |
| २२. | ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल | |
| | प्रथम भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि) | १५०.०० |
| २३. | ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द | ३००.०० |
| २४. | ऋग्वेदभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग | |
| | सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि) | २००.०० |
| २५. | ऋग्वेदभाष्य दसवाँ मण्डल द्वितीय भाग | |
| | सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि) | ९०.०० |
| २६. | यजुर्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द) | २००.०० |
| २७. | यजुर्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द) | ३५०.०० |
| २८. | यजुर्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द) | २५०.०० |
| २९. | यजुर्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द) | १५०.०० |
| | **वेद भाषाभाष्य – (केवल हिन्दी भाष्य)** | |
| ३०. | ऋग्वेदभाषाभाष्य का नमूना | ५.०० |
| ३१. | ऋग्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द) | २००.०० |
| ३२. | ऋग्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द) | ३५.०० |
| ३३. | ऋग्वेदभाषाभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द) | ३५.०० |
| ३४. | ऋग्वेदभाषाभाष्य चौथा भाग (सजिल्द) | २५.०० |
| ३५. | ऋग्वेदभाषाभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द) | ३०.०० |
| ३६. | ऋग्वेदभाषाभाष्य छठा भाग (सजिल्द) | ३०.०० |
| ३७. | ऋग्वेदभाषाभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द) | ५०.०० |
| ३८. | ऋग्वेदभाषाभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द) | ५०.०० |
| ३९. | ऋग्वेदभाषाभाष्य (नवाँ भाग) | |
| | सप्तम मण्डल पहला भाग (सजिल्द) | २५.०० |

| क्रमांक | नाम पुस्तक | मूल्य |
|---|---|---|
| ४०. | ऋग्वेदभाषाभाष्य सप्तम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि) | ३५.०० |
| ४१. | ऋग्वेदभाषाभाष्य अष्टम मण्डल (सजिल्द) | |
| ४२. | ऋग्वेदभाषाभाष्य नवम मण्डल (सजिल्द) | |
| ४३. | ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि) | ४५.०० |
| ४४. | ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि) | ५०.०० |
| ४५. | यजुर्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द) | १००.०० |
| ४६. | यजुर्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द) | ३७५.०० |

## स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड

| | | |
|---|---|---|
| ४७. | सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (पूर्वार्चिक) | |
| ४८. | सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (उत्तरार्चिक) (दोनो खण्डों का सम्मिलित मूल्य) | ४००.०० |
| ४९. | अथर्ववेदभाष्य – (काण्ड १ से २०) तीन भाग का एक सेट | १५००.०० |

## विविध

| | | |
|---|---|---|
| ५०. | गोकरुणानिधि (बढ़िया) | ५.०० |
| ५१. | स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश | ५.०० |
| ५२. | स्वीकारपत्र | ३.०० |
| ५३. | आर्योद्देश्यरत्नमाला (हिन्दी) | ५.०० |

## सिद्धान्त ग्रन्थ

| | | |
|---|---|---|
| ५४. | सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया) | १००.०० |
| ५५. | आर्याभिविनय (बड़ा आकार सजिल्द) | ३०.०० |
| ५६. | आर्याभिविनय (बड़ा आकार अजिल्द) | ७.०० |
| ५७. | आर्याभिविनय (गुटका अजिल्द) | ७.०० |

## कर्मकाण्डीय

| | | |
|---|---|---|
| ५८. | वैदिक नित्यकर्मविधि | २५.०० |
| ५९. | पञ्चमहायज्ञविधि | १२.०० |
| ६०. | विवाह–पद्धति | २०.०० |
| ६१. | संस्कारविधि (सजिल्द) | ७०.०० |
| ६२. | हवनमन्त्राः (बड़ा आकार) | ५.०० |

## पाखण्ड–खण्डन और शंका–समाधान ग्रन्थ

| | | |
|---|---|---|
| ६३. | अनुभ्रमोच्छेदन | |
| ६४. | भ्रमोच्छेदन (साधारण) | ४.०० |
| ६५. | भ्रमोच्छेदन (बढ़िया) | १०.०० |
| ६६. | भ्रान्तिनिवारण | |
| ६७. | शिक्षापत्रीध्वान्त–निवारण (स्वामीनारायण मतखण्डन) | २.०० |
| ६८. | वेदविरुद्धमत–खण्डन | १०.०० |
| ६९. | वेदान्तिध्वान्तनिवारण | २.०० |
| ७०. | शास्त्रार्थ काशी | ८.०० |
| ७१. | शास्त्रार्थ हुगली (प्रतिमा–पूजन विचार) | ६.०० |
| ७२. | सत्यधर्म विचार (मेला चान्दापुर) | ७.०० |
| ७३. | शास्त्रार्थ जालंधर | ३.०० |
| ७४. | शास्त्रार्थ अजमेर | ३.०० |
| ७५. | शास्त्रार्थ बरेली (सत्यासत्य विवेक) | ८.०० |
| ७६. | शास्त्रार्थ मसूदा | ५.०० |
| ७७. | शास्त्रार्थ उदयपुर | ४.०० |
| ७८. | शास्त्रार्थ फिरोजाबाद | १०.०० |
| ७९. | महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ (सजिल्द) | ४०.०० |

## शिक्षा व व्याकरण ग्रन्थ (वेदाङ्ग प्रकाश)

| | | |
|---|---|---|
| ८०. | वर्णोच्चारण शिक्षा | १२.०० |
| ८१. | सन्धिविषय | ४०.०० |
| ८२. | नामिक | |
| ८३. | कारकीय | १०.०० |
| ८४. | सामासिक | ४०.०० |
| ८५. | स्त्रैणताद्धित | |
| ८६. | अव्ययार्थ | ५.०० |
| ८७. | आख्यातिक (अजिल्द) | १५०.०० |

शेष भाग अगले अंक में.......

# पृथिव्यादि भूतों के संयोग से शरीर में चेतनता उत्पन्न होती है

## ( वेदगोष्ठी २०१३ के अवसर पर प्रस्तुत निबन्ध )

- सत्येन्द्र सिंह आर्य

उपर्युक्त विषय चारवाक दर्शन का सिद्धान्त है। बौद्ध और जैन मतों की भांति चारवाक भी नास्तिक मत है। ये सृष्टिकर्त्ता ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करते। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की चर्चा अपने अमरग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में प्रथम दश समुल्लासों में की है। तथा वाममार्गियों सहित आर्यावर्त्तीय (वेद विरुद्ध) मत पंथों की समालोचना एकादश समुल्लास में और बौद्ध, जैन व नास्तिक मतों की समालोचना द्वादश समुल्लास में है। **महर्षि की यह मान्यता थी कि पाँच सहस्र वर्षों के पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई भी मत न था क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या से अविरुद्ध हैं।** वेदों की अप्रवृत्ति होने के कारण महाभारत युद्ध हुआ। इनकी अप्रवृत्ति से अविद्या अन्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया, वैसा मत चलाया। उन सब मतों में चार मत अर्थात् जो वेदविरुद्ध पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी सभी मतों के मूल हैं, वे क्रम से एक के पीछे दूसरा-तीसरा-चौथा चला है। अब इन चारों की शाखा एक सहस्र (यह संख्या तो महर्षि जी के समय की है, अब तो लम्पट बापुओं, बाबाओं, व्यापारी गुरुओं और गुरुमाँओं की आई बाढ़ के कारण यह संख्या कई सहस्र हो गयी होगी) से कम नहीं है। उन्हीं मे से एक यह चारवाक मत है।

चारवाक मत की चर्चा आरम्भ करते हुए ऋषिवर लिखते हैं- ''कोई एक बृहस्पति नामा'' पुरुष हुआ था जो वेद, ईश्वर और यज्ञादि उत्तम कर्मों को भी नहीं मानता था। उनका मत -

**यावज्जीवं सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योरगोचरः।**
**भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः॥**

(सर्वदर्शनसंग्रह चारवाकदर्शन)

कोई मनुष्यादि प्राणी मृत्यु के अगोचर नहीं है अर्थात् सबको मरना है इसलिए जब तक शरीर में जीव रहै, तब तक सुख से रहै। जो कोई कहे कि ''धर्माचरण से कष्ट होता है, जो धर्म को छोड़ें तो पुनर्जन्म में बड़ा दु:ख पावें।'' उसको चारवाक उत्तर देता है कि अरे भोले भाई! जो मरे के पश्चात् शरीर भस्म हो जाता है कि जिसने खाया पिया है, वह पुन: संसार में न आवेगा। इसलिए जैसे हो सके वैसे आनन्द में रहो, लोक में नीति से चलो, ऐश्वर्य को बढ़ाओ और उससे इच्छित भोग करो। यही लोक समझो, परलोक कुछ नहीं। देखो! पृथिवी, जल, अग्नि, वायु इन चार भूतों के परिणाम से यह शरीर बना है, इसमें इनके योग से चैतन्य उत्पन्न होता है। जैसे मादक द्रव्य खाने-पीने से नशा उत्पन्न होता है, इसी प्रकार जीव शरीर के साथ उत्पन्न होकर शरीर के नाश के साथ आप भी नष्ट हो जाता है, फिर किसको पाप-पुण्य का फल होगा।

**तच्चैतन्यविशिष्टदेह एव आत्मा**
**देहातिरिक्त आत्मनि प्रमाणाभावात्॥**

- चारवाक दर्शन

इस शरीर में चारों भूतों के संयोग से जीवात्मा उत्पन्न होकर उन्हीं के वियोग के साथ ही नष्ट हो जाता है, क्योंकि मरे पीछे कोई भी जीव प्रत्यक्ष नहीं होता। हम एक प्रत्यक्ष ही को मानते हैं, क्योंकि प्रत्यक्ष के बिना अनुमानदि होते ही नहीं। इसलिए मुख्य प्रत्यक्ष के सामने अनुमानादि गौण होने से उनका ग्रहण नहीं करते। सुन्दर स्त्री के आलिङ्गन से आनन्द का करना पुरुषार्थ का फल है।

उपरिलिखित चर्चा से स्पष्ट है कि चारवाक मत नास्तिकता का पर्यायवाची है। नास्तिक तो बौद्ध और जैन भी हैं, क्योंकि चारवाकों के समान वे भी ईश्वर और वेद की निन्दा करते और जगद्रचना के लिए किसी चेतन सत्ता के अस्तित्व को नहीं मानते हैं। परन्तु वे जीवन, चेतन, पुनर्जन्म, परलोक और मुक्ति के साथ प्रत्यक्षादि प्रमाणों को भी मानते हैं।

वैदिक धर्म जहाँ त्रैतवाद (तीन अनादि नित्य सत्ताओं

की अवधारणा) को मानता है, वहीं चारवाक ईश्वर की सत्ता को नकारता है, जीव को शरीर के साथ उत्पन्न होने वाला और शरीर के साथ ही नष्ट होने वाला मानता है। पुनर्जन्म और पाप-पुण्य , परलोक आदि के लिए वहाँ कोई स्थान नहीं है, प्रमाणों में केवल प्रत्यक्ष प्रमाण ही चारवाक को स्वीकार्य है। पंच महाभूतों में भी उसने आकाश को गायब कर दिया, विषयभोग को पुरुषार्थ का फल घोषित कर दिया। उसकी विचारधारा की नींव 'खाओ, पियो और मौज करो' Eat, Drink And Be Merry की नीति पर टिकी है। यह सब बातें वेद की उस मान्यता के विपरीत बैठती हैं जहाँ कहा है-

**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।**

- यजुः ४०/२

अर्थात् मनुष्य इस संसार में सौ वर्ष तक वेदोक्त, धर्मानुसार, निष्काम कर्म करते हुए जीने की इच्छा करे।

जिस यज्ञ को चारवाक नहीं मानता, वैदिक मान्यता के अनुसार जो धर्म के तीन स्कन्ध- विद्याध्ययन, यज्ञ और दान माने गए हैं, उनमें यज्ञ है। यहाँ तो पक्षपातरहित न्यायाचरण, सत्यभाषणादि ईश्वराज्ञा जो वेदों से अविरुद्ध है, उसी को धर्म की संज्ञा दी गयी है। यज्ञ उसका अङ्ग है।

चारवाक की बातों का ऋषिवर ने युक्तियुक्त उत्तर दिया है। वे लिखते हैं- ''ये पृथिव्यादि भूत जड़ हैं, उनसे चेतन की उत्पत्ति कभी नहीं हो सकती। जैसे अब माता-पिता के संयोग से देह की उत्पत्ति होती है, वैसे ही आदि सृष्टि में मनुष्यादि शरीरों की आकृति परमेश्वर कर्त्ता के बिना कभी नहीं हो सकती। मद के समान चेतन की उत्पत्ति और विनाश नहीं होता, क्योंकि मद चेतन को होता है, जड़ को नहीं। पदार्थ ''नष्ट'' अर्थात् अदृष्ट होते हैं, परन्तु अभाव किसी का नहीं होता, इसी प्रकार अदृश्य होने से जीव का भी अभाव न मानना चाहिए। जब जीवात्मा सदेह होता है तभी उसकी प्रकटता होती है। जब शरीर को छोड़ देता है, तब वह शरीर जो मृत्यु को प्राप्त हुआ है, वह जैसा चेतनयुक्त पूर्व था वैसा नहीं हो सकता। इस बात की पुष्टि में महर्षि दयानन्द जी बृहदारण्यक का वह वचन उद्धृत करते हैं जिसमें याज्ञवल्क्य अपनी पत्नी मैत्रेयि से कहते हैं कि ''आत्मा अविनाशी है जिसके योग से शरीर चेष्टा करता है।'' जब जीव शरीर से पृथक् हो जाता है तब शरीर में ज्ञान कुछ भी नहीं रहता। आत्मा देह से पृथक् है, इसी कारण शरीर में उसके संयोग से चेतनता और वियोग से जड़ता होती है।

महर्षि जी ने आगे स्पष्ट किया कि जो सुन्दर स्त्री के साथ समागम ही को पुरुषार्थ का फल मानो तो क्षणिक सुख और उससे दुःख भी होता है, वह भी पुरुषार्थ ही का फल होगा। जब ऐसा है तो स्वर्ग की हानि होने से दुःख भोगना पड़ेगा। इससे मुक्ति सुख की हानि हो जाती है, इसलिए यह पुरुषार्थ का फल नहीं।

**चारवाक**- जो दुःख-संयुक्त सुख का त्याग करते हैं, वे मूर्ख हैं। जैसे धान्यार्थी धान्य का ग्रहण और भुस का त्याग करता है, वैसे इस संसार में बुद्धिमान् सुख का ग्रहण और दुःख का त्याग करें। क्योंकि इस लोक के उपस्थित सुख को छोड़ के अनुपस्थित स्वर्ग के सुख की इच्छा कर, धूर्तकथित वेदोक्त अग्निहोत्रादि कर्म, उपासना और ज्ञानकाण्ड का अनुष्ठान परलोक के लिए करते हैं, वे अज्ञानी है। जो परलोक है ही नहीं, तो उसकी आशा करना मूर्खता का काम है। क्योंकि-

**अग्निहोत्रं त्रयो वेदास्त्रिदण्डं भस्मगुण्ठनम्।**
**बुद्धिपौरुषहीनानां जीविकेति बृहस्पतिः।।**

(चारवाक दर्शन)

चारवाक मत प्रचारक 'बृहस्पति' कहता है कि- ''अग्निहोत्र, तीन वेद, तीन दण्ड और भस्म का लगाना बुद्धि और पुरुषार्थ रहित पुरुषों ने जीविका बना ली है।'' किन्तु काँटे लगने आदि से उत्पन्न हुए दुःख का नाम 'नरक', लोकप्रसिद्ध राजा 'परमेश्वर' देह का नाश होना 'मोक्ष' है, अन्य कुछ भी नहीं है।

चारवाक की घोषणाका उत्तर देते हुए महर्षि जी ने कहा कि- ''विषयरूपी सुखमात्र को पुरुषार्थ का फल मानकर विषयदुःख निवारणमात्र में कृतकृत्यता और स्वर्ग मानना मूर्खता है। अग्निहोत्रादि यज्ञों से वायु, वृष्टि, जल की शुद्धि द्वारा आरोग्यता का होना, उससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि होती है, उसको न जानकर, वेद और वेदोक्त धर्म की निन्दा करना धूर्तों का काम है। **जो त्रिदण्ड और भस्मधारण का खण्डन है, सो ठीक है।''**

''यदि कण्टकादि से उत्पन्न ही दु:ख का नाम नरक हो तो उससे अधिक महारोगादि नरक क्यों नहीं? यद्यपि राजा को ऐश्वर्यवान् और प्रजापालन में समर्थ होने से श्रेष्ठ मानें तो ठीक है परन्तु जो अन्यायकारी पापी राजा हो, जो उसको भी परमेश्वरवत् मानते हो, तो तुम्हारे जैसा कोई भी मूर्ख नहीं। शरीर का विच्छेद होना मात्र मोक्ष है तो गदहे, कुत्ते आदि और तुममें क्या भेद रहा, किन्तु आकृति ही मात्र भिन्न रही।''

द्वादश समुल्लास में निर्दिष्ट चारवाक और बौद्धमत का विवरण सायणाचार्य विरचित 'सर्वदर्शन संग्रह' पर ही प्रधान रूप से आश्रित है क्योंकि उस समय इन दोनों मतों के अन्य पुस्तक उपलब्ध न थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने चारवाक दर्शन की मुख्य-मुख्य बातों को दर्शाने के लिए उनके निम्नलिखित श्लोक उद्‌धृत किये हैं-

**अग्निरुष्णो जलं शीतं समस्पर्शस्तथाऽनिलः।**
**केनेदं चित्रितं तस्मात् स्वभावात्तद्व्यवस्थितिः।। १।।**
**न स्वर्गो नाऽपवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः।**
**नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायिकाः ।। २।।**
**पशुश्चेन्निहतः स्वर्गं ज्योतिष्टोमे गमिष्यति।**
**स्वपिता यजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते।। ३।।**
**मृतानामपि जन्तूनां श्राद्धं चेतृप्तिकारणम्।**
**गच्छतामिह जन्तूनां व्यर्थं पाथेयकल्पनम्।। ४।।**
**स्वर्गस्थिता यदा तृप्तिं गच्छेयुस्तत्र दानतः।**
**प्रासादस्योपरिस्थानामत्र कस्मान्न दीयते।। ५।।**
**यावज्जीवेत्सुखं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पिबेत्।**
**भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।। ६।।**
**यदि गच्छेत्परं लोकं देहादेष विनिर्गतः।**
**कस्माद् भूयो न चायाति बन्धुस्नेहसमाकुलः।। ७।।**
**ततश्च जीवनोपायो ब्राह्मणैर्विहितस्त्विह।**
**मृतानां प्रेतकार्याणि न त्वन्यद्विद्यते क्वचित्।। ८।।**
**त्रयो वेदस्य कर्त्तारो भण्डधूर्तनिशाचराः।**
**जर्फरीतुर्फरीत्यादि पण्डितानां वचः स्मृतम्।। ९।।**

(चारवाक दर्शन, श्लोक १ से ९)

चारवाक, आभाणक, बौद्ध और जैन भी जगत् की उत्पत्ति स्वभाव से मानते हैं। जो-जो स्वाभाविक गुण हैं, उस-उससे द्रव्य संयुक्त होकर सब पदार्थ बनते हैं, कोई जगत् का कर्त्ता नहीं ।। १।।

परन्तु इनमें से चारवाक ऐसा मानता है। किन्तु परलोक और जीवात्मा बौद्ध-जैन मानते हैं, चारवाक नहीं। शेष इन तीनों का मत कोई-कोई बात छोड़ के एक सा है।

न कोई स्वर्ग, न कोई नरक और न कोई परलोक में जाने वाला आत्मा है। और न वर्णाश्रम की क्रिया फलदायक है।। २।।

जो यज्ञ में पशु को मार होम करने से वह स्वर्ग को जाता हो, तो यजमान अपने पिता आदि को मार यज्ञ में होम करके स्वर्ग को क्यों नहीं भेजता।। ३।।

जो मरे हुए जीवों को श्राद्ध और तर्पण तृप्तिकारक होता है तो परदेश में जाने वाले मार्ग में निर्वाहार्थ अन्न, वस्त्र, धन को क्यों ले जाते? क्योंकि जैसे मृतक के नाम से अर्पण किया हुआ स्वर्ग में पहुँचता है, तो परदेश में जाने वालों के लिए उनके सम्बन्धी घर में अर्पण कर देशान्तर में पहुँचा देवें । जो यह नहीं पहुँचता, तो स्वर्ग में क्यों कर पहुँच सकता है? ।। ४।।

जो मर्त्यलोक में दान करने से स्वर्गवासी तृप्त होते हैं, तो नीचे देने से घर के ऊपर स्थित पुरुष तृप्त क्यों नहीं होता? ।।५।।

इसलिए जब तक जीवे, तब तक सुख से जीवे। जो घर में पदार्थ न हो तो ऋण करके आनन्द करे,ऋण देना नहीं पड़ेगा। क्योंकि जिस शरीर में जीव ने खाया पिया है, उन दोनों का पुनरागमन न होगा, फिर किससे कौन माँगे और देवेगा?।। ६।।

जो लोग कहते हैं कि मृत्यु समय जीव शरीर से निकलके परलोक को जाता है, यह बात मिथ्या है, क्योंकि जो ऐसा होता, तो कुटुम्ब के मोह से बद्ध होकर पुन: घर में क्यों नहीं आ जाता?।।७।।

इसलिए यह सब ब्राह्मणों ने अपनी जीविका का उपाय किया है। जो दशगात्रादि मृतक क्रिया करते हैं, यह सब उनकी जीविका की लीला है।।८।।

वेद के करने हारे भांड, धूर्त्त और राक्षस ये तीन हैं। 'जर्फरी' 'तुर्फरी' इत्यादि पण्डितों के धूर्त्ततायुक्त वचन हैं।।९।।

इन सब बातों का बुद्धि संगत उत्तर ऋषिवर ने बिन्दुवार दिया है। इनमें जो कुछ बातें ठीक थीं, उनको अखण्डनीय कहा है, यह स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का ऋषित्व है।

विना चेतन परमेश्वर के निर्माण किये जड़ पदार्थ आपस में स्वभाव से नियमपूर्वक मिलकर उत्पन्न नहीं हो सकते। इस वास्ते सृष्टि का कर्त्ता अवश्य होना चाहिए। जो स्वभाव से हों तो द्वितीय पृथिवी, सूर्य,चन्द्र आप से आप क्यों नहीं होते।।१।।

'स्वर्ग' सुखभोग और 'नरक' दु:खभोग का नाम है। जो जीवात्मा न होता तो सुख-दु:ख का भोक्ता कौन हो सके? जैसे इस समय सुख-दु:ख का भोक्ता जीव है, वैसे परजन्म में भी होता है। क्या सत्य भाषणादि दया आदि क्रिया भी वर्णाश्रमियों की निष्फल होंगी? कभी नहीं।। २।।

पशु मार के होम करना वेद में कहीं नहीं है, इसलिए यह खण्डन अखण्डनीय है और मृतकों का श्राद्ध भी कपोलकल्पित होने से वेद विरुद्ध पुराण मत-वालों का मत है।।३,४,५।।

जो वस्तु है उसका अभाव कभी नहीं होता। तो विद्यमान जीव का अभाव कभी नहीं हो सकता। देह भस्म हो जाता है, जीव नहीं। जीव तो दूसरे शरीर में जाता है, इसलिए जो ऋणादि से सुख भोग करेगा, वह दूसरे जन्म में अवश्य भोगेगा।।६।।

देह से निकल के जीव स्थानान्तर और शरीरान्तर को प्राप्त होता है। उसको पूर्वजन्म का ज्ञान कुछ भी नहीं रहता, इसलिए पुनश्च कुटुम्ब में नहीं आता।।७।।

हाँ ब्राह्मणों ने प्रेत का कर्म जीविका के लिए किया है, वेदोक्त नहीं।।८।।

जो चारवाक आदि ने असल वेद देखे होते, तो वेद की निन्दा कभी न करते। भाँड, धूर्त्त और निशाचरवत् पुरुष टीकाकार हुए हैं, उन्हीं की धूर्त्तता है, वेद की नहीं। परन्तु शोक है चारवाक, आभाणक ,बौद्ध और जैनियों पर कि इन्होंने मूल वेद भी न सुने, न देखे और न किसी विद्वान् से पढ़े, इसलिए भ्रष्ट टीका और वाममार्गियों की लीला देख के वेदों से विरोध करके, नष्ट -भ्रष्ट बुद्धि होकर वेदों की निन्दा करने लगे हैं। यही वाममार्गियों की दुष्ट चेष्टा चारवाक, बौद्ध और जैनों के होने का कारण है, क्योंकि चारवाक आदि भी वेदों का सत्य अर्थ नहीं जान सके।।९।।

ऋषिवर ने चारवाक शब्द का अर्थ किया है- जो बोलने में प्रगल्भ और विशेषातार्थ वैतण्डिक होता है। उनकी पहचान है नास्तिकता, वेद और ईश्वर की निन्दा पर मत द्वेष, यज्ञ का विरोध और जगत् का कर्त्ता कोई नहीं मानना आदि। चारवाक ने वर्णाश्रम व्यवस्था की भी निन्दा की है। जबकि सत्य यह है कि वर्णाश्रम व्यवस्था के बिना कोई समाज नहीं चल सकता। भले ही ब्राह्मण को बुद्धि जीवी, अध्यापक, विधायक, उपदेशक, पुरोहित । (Intellectuals, Teachers, Clergy, Judge, Doctor) आदि नामों से पुकारा जाये, क्षत्रिय को पुलिस, सेना, सुरक्षाबल आदि नाम दे दिये जाएं, वैश्य को व्यापारी (Businessman, Trader, Industrialist) आदि नामों से अभिहित किया जाए और शूद्र को श्रमिक, मजदूर या लेबरर (Labourer) कहा जाय। इसी प्रकार ब्रह्मचारी को विद्यार्थी, गृहस्थ को (House-Holder) और वानप्रस्थ संन्यासी को अवकाश प्राप्त (Retired or Pensioner) जैसे नाम दिये जायें। प्राचीन ऋषियों ने इस प्रकार के विभाजन को ही वर्णाश्रम के रूप में व्यवस्थित कर दिया था। इनके पालन से होने वाले लाभों से कौन इनकार कर सकता है?

**वेदों के कर्त्ता धूर्त्त-** यजुर्वेद के २३ वें अध्याय के १९से ३१ तक के मन्त्रों का महीधर ने इतना अश्लील अर्थ किया है कि उसे देखकर कोई भी यही कहेगा कि ''त्रयो वेदस्य कर्त्तारो भण्डधूर्त्त निशाचरा:।'' वैसा करने पर महीधर स्वयं ग्लानि अनुभव कर ३२ वें मन्त्र का अर्थ करते हुए कहते हैं- ''अश्लील भाषणेन दुर्गन्धं प्राप्तानि अस्माकं मुखानि सुरभीणि करोत्वित्यर्थ:।'' अर्थात् इस अश्लील भाषण से जो हमारे मुख अश्लील हो गये हैं, उन्हें यज्ञ सुगन्धित कर दे। मन्त्रों में न अश्लील शब्द हैं और न मन्त्रार्थ में कोई अश्लीलता है। स्वयं ही पहले जानबूझकर अश्लीलता आरोपित कर दी और स्वयं ही उस अपराध के लिए प्रायश्चित की बात कह दी। महीधर का अर्थ मात्र इसलिए त्याज्य नहीं कि वह अश्लील और बेहूदा है अपितु इसलिए कि मन्त्रों

का वह अर्थ है ही नहीं।

जर्फरी तुर्फरी- इन शब्दों से निर्दिष्ट मन्त्र इस प्रकार है-

**सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतू नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका।**
**उदन्यजेव जेमना मदेरू ता मे जराय्वजरं मरायु।।**

– ऋग्वेद १०/१०६/६

यह मन्त्र (१३/५ निरुक्त में) इस प्रकार व्याख्यात है-

(सृण्या इव जर्भरी तुर्फरीतू) हे द्यावा पृथिवी के स्वामी जगदीश्वर। तू दात्री की तरह भर्त्ता और हन्ता है। (नैतोशा इव तुर्फरी पर्फरीका) तू शत्रुहन्ता राजकुमार की तरह दुष्टों को शीघ्र नष्ट करने वाला और उन्हें फाड़ने वाला है, (उदन्यजा इव जेमना मदेरु) और तू चान्द्रमस अथवा सामुद्ररत्न की तरह मन को जीतने वाला अर्थात् अपनी ओर खींचने वाला तथा प्रसन्नताप्रद है, (ता मे मरायु जरायु) हे अश्वी! वह तू मेरे मरणधर्मा शरीर को (अजरम्) बुढ़ापे से रहित कर।

इससे स्पष्ट है कि वेदमन्त्रों के वास्तविक अर्थों को न जानने वाले ही वेदों के रचयिता को धूर्त्तादि नामों से पुकार सकते हैं। यदि चारवाक मत के संस्थापक ने वेदों का प्रामाणिक अर्थ शतपथब्राह्मणादि के आधार पर किया गया देखा होता तो वेदों के सम्बन्ध में उनकी विचारधारा इतनी दूषित न होती। वे बिना विचारे वेदों की निन्दा करने पर तत्पर हुए। उनमें इतनी विद्या ही नहीं थी जो सत्यासत्य का विचार कर सत्य का मण्डन और असत्य का खण्डन करते। वास्तव में वाममार्गियों ने मिथ्या कपोल कल्पना करके वेदों के नाम से अपना प्रयोजन सिद्ध करना अर्थात् यथेष्ट मद्यपान मांस खाने और परस्त्री गमन करने आदि दुष्ट कामों की प्रवृत्ति होने के अर्थ वेदों को कलङ्कित किया। इन्हीं बातों को देखकर चारवाक वेदों की निन्दा करने लगे और पृथक् एक वेद विरुद्ध अनीश्वरवादी अर्थात् नास्तिक मत चला दिया।

**- जागृति विहार, मेरत**

---

मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ से विद्या का सम्पादन, विधिपूर्वक अन्न और जल का सेवन, शरीरों को नीरोग और मन को धर्म में निवेश करके सदा सुख की उन्नति करें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.१४**

## ऋषि मेला २०१५ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला २०,२१,२२ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१५ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

**स्टॉल सुविधा:**- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

**ध्यातव्य:** - १. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। २. अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। ३. बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। ५. आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें।

---

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९**

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२**

# ऋषि मेला – २०१५

## कार्यक्रम

**शुक्रवार, दिनांक २० नवम्बर, २०१५**

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ-आसन-प्राणायाम-ध्यान-सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ। ब्रह्मा -पं. सत्यानन्द वेदवागीश

०९.०० से ०९.३० तक – वेद प्रवचन

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से १२.३० तक – **ध्वजारोहण व उद्‌घाटन सत्र**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन, विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **भजन-प्रवचन-सम्मान**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ, सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **महर्षि दयानन्द-एक राष्ट्र पुरुष,** भजन-प्रवचन-सम्मान

**शनिवार, दिनांक २१ नवम्बर, २०१५**

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ-आसन-प्राणायाम-ध्यान-सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ। ब्रह्मा – पं. सत्यानन्द वेदवागीश

०९.०० से ०९.३० तक – वेद प्रवचन

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से १२.३० तक – **भजन-प्रवचन-सम्मान**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **वर्तमान में आर्यसमाज की कार्य प्रणाली, भजन-प्रवचन-सम्मान**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ-सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **भजन-प्रवचन-सम्मान**

**रविवार, दिनांक २२ नवम्बर, २०१४**

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ-आसन-प्राणायाम-ध्यान-सन्ध्या

०७.०० से ०९.३० तक – यज्ञ, वेदपाठ, **पूर्णाहुति,** ब्रह्मा-पं. सत्यानन्द वेदवागीश

०९.३० से १०.०० तक – वेद प्रवचन

१०.०० से १०.३० तक – प्रातराश

१०.३० से १२.३० तक – **भजन-प्रवचन-सम्मान**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **आर्य युवक सम्मेलन, भजन एवं प्रवचन**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ-सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **धन्यवाद व समापन सत्र**

## वेद-गोष्ठी

| | |
|---|---|
| विषय | : **भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद** |
| स्थान | : **ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर** |
| २० नवम्बर | : उद्‌घाटन सत्र – ११.०० से १२.३० तक |
| | : द्वितीय सत्र – १४.३० से १७.०० तक |
| २१ नवम्बर | : तृतीय सत्र – १०.०० से १२.३० तक |
| | : चतुर्थ सत्र – १४.३० से १७.०० तक |
| २२ नवम्बर | : समापन सत्र |

**कार्यक्रम में आवश्यकतानुसार परिवर्तन संभव है।**

# सघन-साधना-शिविर रोजड़ की मेरी अन्तर्यात्रा

– ब्र. राजेन्द्रार्यः

**योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे।**
**सखाय इन्द्रमूतये।।**

– यजुर्वेद ११/१४

आर्यावर्त की पवित्र भूमि गुजरात प्रान्त ने समय-समय पर राष्ट्र को अनेकों महापुरुष प्रदान किये हैं। यथा- विश्व गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती, सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एवं देशभक्त श्याम जी कृष्ण वर्मा आदि। इन महापुरुषों ने राष्ट्रऋण से उऋण होने हेतु अपना सर्वस्व देश के लिए न्यौछावर कर दिया। उन्नीसवीं शताब्दी में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सच्चे शिव की प्राप्ति, योगाभ्यास एवं वेद विद्या के प्रचार के लिए अपने सम्पन्न माता-पिता का घर लगभग इक्कीस वर्ष की अवस्था में छोड़ दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने गुरुवर्य विरजानन्द का ऋण बड़ी श्रद्धापूर्वक लगभग २० वर्ष तक चुकाया। ऐसे गुरु दक्षिणा चुकाने का वर्णन हमें अभी तक इतिहास में पढ़ने को नहीं मिला है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए एक युवा संन्यासी स्वामी सत्यपति परिव्राजक ने गुजराता को अपनी कर्मभूमि बनाने का निश्चय किया तथा चैत्रशुक्ला प्रतिपदा (तद्नुसार १० अप्रैल सन् १९८५) गुरुवार के दिन आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट, जिला साबरकांठा के सहयोग से दर्शन-योग-महाविद्यालय, रोजड़ की स्थापना की। पूज्य स्वामी सत्यपति परिव्राजक के अथक परिश्रम, तप-साधना व पुरुषार्थ से विद्यालय ने लगभग ५५ युवा दर्शनाचार्य विद्वान् राष्ट्र को प्रदान किये हैं। श्रद्धेय गुरुवर्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक के योग शिविरों में भाग लेने के कारण हमें मान्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वरार्यः, आचार्य आनन्द प्रकाश जी, उपाध्याय श्री ब्र. विवेक भूषण आर्य (वर्तमान-स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक), आचार्य सत्यजित् जी, स्वामी विष्वङ् जी परिव्राजक, आचार्य आशीष जी, ब्र. ईश्वरानन्द आदि से संस्कृत भाषा, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, यज्ञ, ध्यान योग एवं दर्शनों की सूक्ष्म विद्या का प्रशिक्षण (संक्षिप्त) प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दर्शन योग महाविद्यालय एवं वानप्रस्थ साधक आश्रम से प्रकाशित वैदिक साहित्य हमें सस्नेह प्रेषित किया जाता है। योगनिष्ठ पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक के सान्निध्य में श्रेय मार्ग के पथ पर आगे बढ़ने वाले आध्यात्मिक सहचारी योग जिज्ञासुओं के लिए एक तीन मास का आषाढ़ शुक्ला द्वादशी वैक्रावाब्द २०६० से आश्विन शुक्ला २०६० तक तदनुसार ११ जुलाई २००३ से ८ अक्टूबर २००३ तक त्रैमासिक उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया था। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का वृतान्त संकलयित एवं सम्पादित युवा विद्वान् ब्र. सुमेरुप्रसाद जी दर्शनाचार्य ने किया था जिसे दर्शन योग महाविद्यालय की तरफ से बृहती ब्रह्ममेधा (तीन भाग) केरूप में सन् २०१२ में प्रकाशित किया गया था। जिसे मान्य मित्र शुभहितैषी श्री ब्र. दिनेश कुमार जी ने मुझे प्रेषित किया था। एन.टी.पी.सी. लिमिटेड/ सिंगरौली भारत सरकार के उद्यम में अभियन्ता पद पर कार्यरत रहने के कारण व्यस्तता अधिक होने से इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का मैं अभी तक विधिवत अध्ययन नहीं कर सका। मई २०१५ में मान्य भ्राता श्री ब्र. दिनेश कुमार जी ने मुझे चलभाष द्वारा दर्शन-योग-महाविद्यालय द्वारा आयोजित उच्च स्तररीय एक वर्षीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण (सघन-साधना-शिविर) की सूचना दी। शिविर का लाभ प्राप्त करना मेरे लिए एक सुनहरा अवसर था। इस शिविर में भाग लेने की अनुमति हेतु ३ जुलाई २०१४ को पत्र प्रषित किया। विद्यालय के सहव्यवस्थापक श्री ब्रह्मदेव जी ने मुझे सहर्ष अनुमति प्रदान कर दी तथा चलभाष पर मुझसे कहा कि जब ट्रेन में दिल्ली से प्रस्थान करना हो, तब सूचित कर देना। मेरी आत्मिक उन्नति में विद्यालय परिवार के प्रत्येक सदस्य का सर्वदा सहयोग रहता है। पूज्य श्री स्वामी ध्रुवदेव जी परिव्राजक ने ऋषि मेला २०१४, अजमेर में मुझसे कहा कि-''क्या दर्शनों की विद्या पढ़ने की इच्छा नहीं होती है?'' इस दृष्टि से यह सघन-साधना-शिविर का मेरा अल्पकालीन प्रवास दिनांक १७/७/२०१५ से २५/७/२०१५ तक मेरे जीवन के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा है। विद्यालय के सुरम्य प्राकृतिक एवम् आध्यात्मिक वातावरण में रहकर प्रशिक्षण काल में

जो मुझे विशेष अनुभूतियाँ हुई उनमें से कुछ अन्तर्यात्रा के अनुभव प्रेरणा के लिए उद्धृत हैं-

१. स्वाध्याय के काल में मैंने वृहती ब्रह्ममेधा (प्रथम भाग) का स्वाध्याय करते समय मुझे ऐसा आभास होता था जैसे पूज्य गुरुवर श्री स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की कक्षा में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा हूँ तथा ऋषियों के सन्देश को श्रवण कर रहा हूँ। स्वाध्याय से मेरे इस सिद्धान्त में दृढ़ता आयी कि ''मानव जीवन का चरम लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति ही है। **'नान्यः पन्था विद्यतेऽनाय'** अर्थात् अन्य कोई मार्ग नहीं है।''

२. यज्ञोपरान्त पूज्य श्री स्वामी ध्रुवदेव जी परिव्राजक से जब वेदोपदेश श्रवण करता था तब वेद स्वाध्याय, शतपथ ब्राह्मण एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन की प्रेरणा मिलती थी तथा जब तक मानव अपने दुर्गुणों, दुर्व्यसनों का परित्याग नहीं करता है तब तक अभ्युदय एवं निःश्रेयस के पथ पर आगे नहीं बढ़ सकता। इसलिए मेरी दृष्टि में प्रत्येक आर्य समाज के सत्संग में ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, आर्याभिविनय जैसे उच्चकोटि के ग्रन्थों का स्वाध्याय अनिवार्य रूप से करना चाहिए। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी अपने वैचारिक क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लासः में लिखा है- ''आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना।''

३. पूज्य आचार्य श्री ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती की ध्यान प्रशिक्षण, विवेक-वैराग्य प्रशिक्षण, न्याय दर्शन प्रशिक्षण एवम् आत्मनिरीक्षण कक्षाओं में जब मैं भाग लेता था तब पता चलता था कि हमारे जीवन में तो अभी अविद्या ही भरी पड़ी हुई। महर्षि पतञ्जलि के सूत्र-

अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या।

(योग दर्शन २/५) को यथार्थ रूप में समझने के लिए मेरे लिए यह शिविर अत्यन्त उपादेय रहा।

४. ध्यान प्रशिक्षण की कक्षा में मुझे ऐसा अनुभव होता था कि चित्त की वृत्तियों के निरोध के लिए योगाभ्यास के किसी एक आसन (=पदमासन, सुखासन, स्वस्तिकासन) में बैठने का अभ्यास कम से कम एक घण्टे का अवश्य रहना चाहिए। महर्षि पतञ्जलि महाराज उच्चकोटि के साधक थे इसीलिए उन्होंने ''स्थिर सुखमासनम्'' सूत्र (योग दर्शन २/४६) सत्य ही लिखा है। ऐसा निर्णय मैं निदिध्यासन काल में भी कर सका।

५. विवेक-वैराग्य, ध्यानादि के क्रियात्मक अभ्यास के लिए मेरे विचार से ''**योगः कर्मसु कौशलम**'' में जो निष्णात योग साधक (सच्चे गुरु) हों उन्हीं से प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए तभी सच्चे योग मार्ग में सफलता मिलती है अन्यथा नहीं।

६. आत्म निरीक्षण ..........उत्कर्ष के मार्ग पर बढ़ने के लिए सर्वोत्तम साधन है। सुयोग्य विद्वान् व्यक्ति के समक्ष अपने दोष बताने से जहाँ दोषों को छोड़ने की विधि पता चलती है, वहीं पर तत्त्वज्ञान के द्वारा अनेक जन्मों के जो सूक्ष्म संस्कार= काम, क्रोध, लोभ, राग, अंहकार आदि होते हैं, उन्हें हटाने में सहायता मिलती है।

७. उपासना काल में मन की सकाग्रता के लिए मुझे अनुभव हुआ कि दैनिक कार्यों को करते हुए जितना अधिक यम (=अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) तथा नियमों (=शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान) अर्थात् योगाभ्यास के जो महाव्रत हैं उनका एवं मौनव्रत का पालन किया जावे उतना ही उपासना अच्छी होती है। सन्ध्योपासना के मन्त्रों एवं जप के वाक्यों के एक-एक शब्द का अर्थ जब कंठस्थ रहता है तब आत्मा मन द्वारा बाह्यवृत्तियाँ उपासना काल में कम उठाता है।

८. योगाभ्यास का मार्ग कठ ऋषि के अनुसार- **'क्षुरस्यधारा निशिता दुरत्या दुर्ग पथस्तत् कवयो वदन्ति'** अर्थात् छूरे की धार पर चलने के समान अवश्य है लेकिन योग के मार्ग का जिन प्रतिभाओं ने आत्मसात किया हुआ है ऐसे योग के विशेषज्ञों से ''समित्पाणि'' की भावना के साथ तप, ब्रह्मचर्य, विद्या और श्रद्धापूर्वक योगाभ्यास करने में सफलता अवश्य मिलती है।

मेरी विद्यालय के निदेशक श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक एवम् पूज्य आचार्यों से एक करबद्ध विनती है कि इस सघन-साधना-शिविर की वेद प्रवचन ध्यानयोग प्रशिक्षण, विवेक-वैराग्य प्रशिक्षण एवम् आत्मनिरीक्षण कक्षाओं के यदि संभव हो सके तो सी.डी. तैयार करके इन्टरनेट एवं यू ट्यूब आदि पर डाला जावे, जिससे देश-

विदेश में ऋषियों के सन्देश का अधिकतम प्रचार हो सके। आज इलेक्ट्रानिक एवं प्रिन्ट मीडिया का युग है। यदि इसे नहीं अपनाया गया तो आगे आने वाले समय में दर्शनों में विद्यमान विद्यायें धीरे-धीरे भौतिक चकाचौंध के कारण विलुप्त हो जाने की संभावना है।

इस प्रकार के सघन-स्वाध्याय-शिविर कन्याओं के आर्ष गुरुकुलों में कम से कम त्रैमासिक या १५ दिवसीय सत्र आयोजित करेंगे तो मेरी दृष्टि में अच्छा रहेगा।

राष्ट्रभक्त, भारतीय संस्कृति के सम्पोषक भारत के माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सत्प्रयास से २१ जून २०१५ को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस विश्व के लगभग १९२ देशों द्वारा मनाया गया। यह अलग विषय है कि इस योग दिवस मनाने का लक्ष्य "**योगश्चित्तवृत्ति निरोध:**" नहीं था। योग भारत के लिए आने वाले दिनों में एक बड़ा बाजार साबित हो सकता है। आज का मानव जैसे-जैसे भौतिक उन्नति कर रहा है वैसे-वैसे तनावयुक्त जीवन के लिए मजबूर है। मेरा विश्वास है कि यदि आर्ष पद्धति के योग विज्ञान को जन-जन तक पहुँचाया जावे तो मानव को जहाँ तनावमुक्त सुख शान्ति प्राप्त होगी, वहीं विश्व से आतंकवाद को समाप्त करने में सफलता मिलेगी। भारत पुन: कम से कम योग विद्या के क्षेत्र में विश्व गुरु के आसन पर तो विराजमान हो ही सकता है।

**एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मन:।**
**स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवा:**

**- मनुस्मृति**

**- आर्यसमाज, शक्ति नगर**

# पुस्तक परिचय

**पुस्तक का नाम** – वेद विचार तरंग
**लेखक** – श्री हर्ष देव सिन्हा
**प्रकाशक** – अनुराधा प्रकाशन, ११९३, पंखा रोड, नांगल राया, निकट डी २ ए, जनकपुरी, नई दिल्ली
**मूल्य** – २००=०० **पृष्ठ संख्या** – १३४

मानव जीवन अमूल्य है वह अपने जीवन को उत्तम किस प्रकार बना सकता है। इसके लिए सद्‌ग्रन्थों का अध्ययन, स्वाध्याय एवं विद्वानों के उत्तम विचारों को हृदयङ्गम करें। आज मानव अपने कर्त्तव्य पथ को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण कर रहा है यह कहाँ तक उचित है? हमने धर्म के मर्म को भुला दिया। प्राचीन संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। हमारा दायित्व क्या है? आज की संस्कृति अध:पतन की ओर ले जा रही है। हम, हमारा समाज, नागरिक कहते हैं क्या समय आ गया है? वेद, विज्ञान एव यज्ञ प्रणाली को भूल रहे हैं, जबकि हमारे आदर्श राम-कृष्ण प्रतिदिन यज्ञ किया करते थे, ब्रह्मचर्य को भूलकर यौन शिक्षा पर बल दे रहे हैं।

भ्रष्टाचार को नेताओं, बुद्धिजीवियों तथा अनेक पार्टियों के अपने जीवन रक्षा का आधार बना लिया है, जिस धरा पर नारी का सम्मान था, मातृशक्ति कहा जाता और देवीरूपा में पूजा-अर्चना करते, वहीं अत्याचार, शोषण, हत्यायें हो रही हैं, आदर्श, अनुशासन समाप्त होता जा रहा है, ऐसे में लेखक ने २७ बिन्दुओं पर अपना मन्तव्य केन्द्रित किया है। आपको वेदों का पठन-पाठन, स्वाध्याय कुछ जीवन प्रेरणा के दोहे, भजन, वेद की सूक्तियाँ और ऋषि के जीवन, आर्यसमाज एवं वेद प्रचार हमारे जीवन का आधार बने। अवसर प्रदान किया है। आंग्ल भाषा की सामग्री प्रेरणा हेतु प्रेषित की है।

सभी धर्मप्रेमी, समाज सेवी, मातृशक्ति, युवा, वृद्धजन, स्वाध्याय कर जीवन को उत्तम बनाकर अपना व देश का उद्धार करें। लेखक का साधुवाद। पाठकों के लिए उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की है। अशुद्धि का शुद्धि पत्र भी अंकित किया है फिर भी पृष्ठ ४३ पर सुझाव ६ में स्वाध्याय होना चाहिए। इसी प्रकार पृष्ठ ९१ पर पुनरागमन होना चाहिए। प्रुफ में अशुद्धियाँ रह गई हैं। पाठक अवश्य लाभ उठाएँ एवं प्रचार-प्रसार में भेंट देने का श्रम करावें।

दृष्टव्य- वेद की सूक्ति, 'प्रशस्तिम् अम्बनस्कृ'। ऋग्वेद २/४१/१६। हे माँ, हमें प्रशस्ति दो।

राष्ट्र के गुणों की आवश्यकता है, वे इस प्रकार-

**सत्यं बृहदृतमुग्रम दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ: पृथिवी धारयन्ति।**
**सा नो भूतस्य, भवस्य पत्नी डरुं लोंक पृथिवी न: कृतोत।।**

– अथर्व ७२/१/८

वेद-पाठ और मनोकामनाएँ:-

वेद मन्त्रों के उच्चारण मात्रसे ही यजमान की कमनाएँ पूर्ण नहीं हो सकती। स्वामी जी ने सत्यार्थ के तृतीय समुल्लास में इसे स्पष्ट किया है।

## दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**
**IFSC-SBIN0007959**

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**
**IFSC-IBKL0000091**
email : psabhaa@gmail.com

**मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर**

## आस्था भजन ( चैनल ) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

# आर्यों का समाज कहाँ है?

– सोहनलाल कटारिया

लेखक पुराने आर्य समाजी हैं। संगठन की वर्तमान समय में शिथिलता एवं समय के साथ-साथ आई कुछ न्यूनताओं पर आपने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। ऐसा समय आर्यसमाज में कभी नहीं रहा कि जन्मना जाति को आधार बनाकर किसी को सदस्य न बनाया गया हो। समय-समय पर स्थान-स्थान पर आर्यसमाजें यह प्रयत्न करती रहीं कि इससे जुड़े लोग अपने नाम के साथ आर्य लगाये और (जन्मना) जाति-सूचक शब्द न लगायें। इस मिशन में पूर्ण सफलता नहीं मिली। व्यापक रूप में आर्यसमाज व्यक्तियों तक सम्बद्ध रहा, परिवारों तक (कुछ अपवादों को छोड़कर) नहीं पहुँच सका। लेखक के विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। हम श्री सोहनलाल कटारिया जी का लेख पाठकों के लाभार्थ यहाँ मूल रूप में दे रहे हैं। **-सम्पादक**

'कुछ तड़प-कुछ झड़प' के स्तम्भ लेखक ने परोपकारी जुलाई (प्रथम) २०१५ के अंक में लिखा है- ''गंजोटी के इस कार्यक्रम में 'दलित आर्य परिवारों ने सोत्साह बढ़-चढ़कर प्रत्येक घर से वेद प्रकाश हुतात्मा के नाम पर बिना माँगे दान दिया।' यह प्रसंग आज भी वहाँ चर्चित है। यह आनन्द की बात है।''

आर्य परिवार दलित है तो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य भी होने ही चाहिये। मैंने पढ़ा है कि आर्यसमाज के संगठन में प्रारम्भिक काल में तथाकथित दलित वर्ग को सदस्य ही नहीं बनाया जाता था और जो व्यक्ति अपने नाम के साथ आर्य लिखता था, उसे ताना मारकर चिढ़ाते थे कि यह अपनी जात को छुपाता है, इससे बचने के लिये लोगों ने आर्य लिखना त्याग दिया (मनुस्मृति के उदाहरण देते थे, शर्मा, वर्मा, गुप्त, दास) यह ब्राह्मण धर्म की मानसिकता की गहरी पैठ है।

वर्तमान में आर्यसमाज के संगठन में अन्य संगठनों के अनुसार प्रवेश के लिये एक आवेदन भरना पड़ता है और अपनी आय का शंताश धन भी देना अनिवार्य है, यदि वह चन्दा नहीं देता है तो सदस्यता समाप्त हो जाती है, यही नहीं, यदि सदस्य संगठन के नियमों, सिद्धान्तों के विरुद्ध कार्य करने का दोषी पाया जाता है तो उसे संगठन से निष्कासित भी कर दिया जाता है अर्थात् इस संगठन में जबतक व्यक्ति चन्दा देता है तबतक ही सदस्य रहता है- स्वयं भी संगठन को त्याग सकता है। इस प्रकार व्यक्ति के 'सामाजिक' संगठन से इसकी कोई निरन्तरता नहीं रहती है। लोगों को कहते सुन लेंगे कि ''मेरे दादाजी आर्यसमाजी थे।''

'समाज' का अर्थ है- व्यक्तियों का वह समूह जहाँ उनका आपस में खानपान, विवाह और दु:ख-सुख में सम्मिलित होना और एक दूसरे के कल्याण में तत्पर रहना होता हो। वर्तमान आर्यसमाज संगठन इन सामाजिक व्यवहारों को लेशमात्र भी नहीं निभाता है। यह भी 'लॉयन, रोटेरी अथवा फिलेनथ्रफिक सोसायटी' क्लब के समान ही कार्य कर रहा है। जब किसी समूह की सामाजिक आवश्यकतायें पूरी नहीं होंगी तो उसके सदस्य-परिवार इस संगठन से क्यों जुड़ेंगे? दलित परिवारों का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

मानव समाज के समूह के निर्माण में विवाह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी है और इसके महत्व को समझकर सार्वदेशिक सभा के प्रयासों से आर्य विवाह एक विधान (अन्तरजातीय) पारित करवाया गया। इसका लाभ तो थोड़ा मिला परन्तु आज तो दुरुपयोग ही हो रहा है। आर्यों का सामाजिक समूह तो बना नहीं। प्रसिद्ध आर्यों की पुत्रियाँ इतर धर्मावलम्बियों में विवाही जा रही है और आर्यों से उनकी मूल जातीय समूह से युवतियाँ विवाही जा रही हैं, परिणाम आर्यों का समाज बनता ही नहीं है। एक आर्यसमाजी के देहान्त हो जाने पर उसके परिवार का कोई सदस्य आर्यसमाज के संगठन का सदस्य बने, यह अनिवार्य तो है नहीं, बाध्यता भी नहीं। मैं कितने ही प्रसिद्ध आर्यसमाजियों को जानता हूँ, जो महर्षि के जीवनकाल में, उनकी सेवा में रहे थे, आज उनके परिवार का कोई सदस्य आर्यसमाज का सदस्य नहीं है और न ही आर्यसमाज के नियमों, सिद्धान्तों का पालन करता है। **अजमेर-मेरवाडा और मेवाड़ में कितने ही पौराणिकों, जैनियों को, जिन्हें स्वामी जी ने स्वयं यज्ञोपवीत धारण कराकर वैदिक धर्म आर्यसमाज में ही दीक्षित कराया, उनके वंशज अपने पूर्व धर्म समाज-जाति में ....... गये।** आज से पचास-

साठ वर्ष पूर्व के आर्य समाजियों (जिनका देहान्त हो गया है) के परिवार का कोई विरला ही सदस्य, वर्तमान आर्यसमाज संगठन का सदस्य है। बड़े-बड़े आर्यसमाज (अजमेर जैसे गढ़) की सभासदों की संख्या १५/२० भी नहीं है। साप्ताहिक सत्संग में यज्ञ पर बैठने के लिये चार व्यक्ति भी उपलब्ध नहीं होते हैं।

आर्यसमाजी की परिभाषा, 'आर्य विवाह एक्ट' के अनुसार वह व्यक्ति - (क) किसी भी आर्यसमाज का सदस्य हो, (ख) खण्ड (क) में वर्णित व्यक्ति के कुटुम्ब का सदस्य या आश्रित सम्बन्धी।

आर्य और आर्यसमाजी शब्द एक ही व्यक्ति के लिये प्रयुक्त होते हैं। वस्तुत: यह दोनों पर्यावाची शब्द है ''आर्यसमाज'' शब्द का शाब्दिक अर्थ- 'आर्यों का समाज' है। और इस समाज वाले को आर्यसमाजी कहते हैं। भाषा और कानून दोनों ही दृष्टियों से इन दोनों शब्दों से एक ही व्यक्ति का बोध होता है। साधारण व्यवहार में व्यक्ति को अपना धर्म बताने के लिये किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, केवल घोषणा पर्याप्त होती है। कोई कहे मैं हिदू हूँ, मुसलमान हूँ, आर्यसमाजी हूँ तो ऐसा ही मान लिया जाता है। बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में आर्यसमाजी बनने और कहलाने में व्यक्ति शान गौरव समझताा था। जनगणना में भी आर्य समाजियों की अलग से गणना की गयी थी, १९३१ की जनगणना के अनुसार राजपुताने में- आर्य १४०७३, सिक्ख ४२९४३, जैन ३२०२४५, ईसाई १२७२५, हिन्दू २०६०६००३, इनमें ब्राह्मण धर्म मानने वाले ९९९९१४२ थे परन्तु विडम्बना है कि काल के साथ हम अपनी संख्या गणना कराने से हट गये। तर्क हम 'अल्पसंख्यक' नहीं होना चाहते, हिन्दुओं के अन्तर्गत रहने में ही राष्ट्रहित होगा। यह नहीं मानते कि 'हिन्दू' ऐसा पौराणिक महासागर है, इसमें कितनी ही बाहर से आयी हुई जातियाँ- हूण, शक, यवन, सब इसमें डूब गये, आज उनका अस्तित्व नहीं रहा। **इसी प्रकार आर्य भी इसी महासागर में बनते रहते हैं और डूबते रहते हैं- छटपटाते हुये, न इधर के न उधर के।**

आर्यों के समाज के निर्माण के बारे में प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता ब्यावर के श्री वैद्य रविदत्त जी कहा करते थे कि आर्यसमाज प्रवेश करने के पश्चात् उस व्यक्ति का, पिछला द्वार जहाँ से वह आता है, बन्द हो जाना चाहिये, तब ही आर्यसमाज बनेगा, अन्यथा पिछला द्वार खुला है, तो फिर उसे पुन: उसी द्वार से लौटने में विलम्ब नहीं होगा। यद्यपि पं. भगवानस्वरूप जी न्यायूभूषण जैसे विद्वान् का मत सदा यही रहा कि आर्यसमाजियों को अपने-अपने समाज-जाति में ही रहकर अपने समाज का सुधार करते रहना चाहिये। डॉ. धर्मवीर जी ने भी कितनी ही बार कहा है कि जातीय संगठन इतना मजबूत है कि इसे तोड़ना, असम्भव जैसा है जब महर्षि दयानन्द इसे नहीं तोड़ सके तो भविष्य में भी इसे तोड़ने वाला दिखायी नहीं देता। **गुरुकुल विश्व विद्यालय में एक नरदेव को यज्ञोपवीत धारण कराया, स्नातकोत्तर भूषित करके पण्डित बनाया परन्तु सामाजिक व्यवहार में जब वह सांसारिक कर्म क्षेत्र में गृहस्थाश्रम जीवन यापन के लिये उतरता है** तो उसी मूल दलित समाज में ही प्रवेश करना पड़ता है- राजनैतिक जीवन में लोकसभा की 'दलित' आरक्षित सीट से चुनाव लड़ता है और ललाट पर एक अमिट दलित की छाप लग जाती है। यज्ञोपवीत और स्नातक की उपाधि गौण, उसे 'वर्तमान जाति' से छुटकारा पाने के लिये दूसरा जन्म ही एक मात्र सपना रहता है।

परोपकारिणी सभा ने कुछ वर्ष पूर्व अन्तरजातीय विवाह के लिये ऋषि मेले के अवसर पर प्रयत्न किया था परन्तु निष्फल रहा- एक महिला ने कहा ''मुझे ब्राह्मण लड़की ही चाहिये आर्यसमाज में तो नीच जाति के लोग भी आ जाते बताये जाते हैं।''

अस्तु आर्यों को अपना सामाजिक संगठन करना होगा। अपनी अलग पहचान बनानी होगी ''जातिवाद का अजगर देश को निगलने पर तुला बैठा, इसको समाप्त करना होगा।'' पौराणिक सनातनी के अनुसार भेद नहीं होगा। तब ही हमारे स्त्संगों, उत्सवों, पर्वों के कार्यक्रमों में परिवार के सदस्य उपस्थित होंगे और महर्षि के उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेंगे और आर्यसमाजी कहलाने में गौरव, शान का अनुभव कर सकेंगे। ९५ वर्ष की आयु हो गयी है। आर्यसमाज में कई स्थानों में, सभासद, उपमन्त्री, मन्त्री, उपप्रधान, प्रधान और राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा में उपमन्त्री रह चुका हूँ।

वर्तमान में तो आर्यों का समाज कहाँ है, ढूँढ़ता ही रहता हैं, कोई बतायेगा, कहाँ है?

**- ८९, पहाड़गंज, राजेन्द्र स्कूल के अजमेर, राज.**

# जिज्ञासा समाधान - ९८

- आचार्य सोमदेव

**जिज्ञासा**- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (श्री घूडमल प्रहलाद कुमार आर्य धर्मार्थ न्यास) द्वारा प्रकाशित छप रहा था उसमें पेज नं. २४ पर लिखा है ब्रह्मा जी ने अग्नि, वायु, रवि व अङ्गिरा से वेद पढे।

इसका मतलब ही ब्रह्मा जी का जन्म अग्नि, वायु... आदि के बाद हुआ है।

(१) अग्नि, वायु.......इनको वेदों का ज्ञान किसने दिया।

(२) ओ३म् का जाप करके हम ब्रह्मा जी की उपासना करते हैं उपनिषद में भी ओ३म् खम् ब्रह्मा तीनों को एक ही बताया गया है। गीता में भी कृष्ण अर्जुन को कहते हैं ओ३म् का जप करके उस ब्रह्मा को प्राप्त कर,

जिज्ञासा यह है कि ओ३म् का जाप करके ब्रह्मा जी की उपासना करते हैं । ब्रह्माजी से पहले अग्नि, वायु....आदि हुये क्योंकि ब्रह्माजी ने उनसे वेदों का ज्ञान प्राप्त किया, फिर जिसने अग्नि, वायु, रवि व अङ्गिरा को वेदों का ज्ञान दिया उसका जाप किस शब्द या श्लोक से करे क्योंकि सभी जगह तो ब्रह्मा जी का ही जिक्र आता है।

**समाधान-(१)(क)** किसी विषय को स्पष्ट समझने के लिए पूर्वापरप्रसंग को ठीक से जानना, विषय वस्तु वाले ग्रन्थ को सम्पूर्ण पढ़ना व उस ग्रन्थ के लेखक की अन्य कृतियाँ भी पढ़ना आवश्यक हो जाता है। इतना करने पर प्राय: हमें बात स्पष्ट समझ में आ जाती है इतना करने पर भी समझ में न आवे तो योग्य विद्वान् से पूछ कर स्पष्ट कर लें। बहुत कुछ जिज्ञासाओं का समाधान तो हमारे द्वारा ठीक प्रकार से अध्ययन करने में ही हो जाता है।

आपने जो संदर्भ दिया है वह संदर्भ सर्वथा ठीक है भूल समझने की है, सर्वप्रथम वेद पढ़ने वाला ऋषि ब्रह्मा ही हुआ है। महर्षि ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा इन चारों ऋषियों से चारों वेद पढ़े। उन चारों ऋषियों को स्वयं परमात्मा ने वेद का ज्ञान दिया क्योंकि आदि सृष्टि में ये चार आत्माएँ अत्यन्त पवित्र थी। इनके अन्दर साक्षात् परमेश्वर से वेद ज्ञान ग्रहण करने की पात्रता थी। आपने जो पूछा हैं 'इन चारों को ज्ञान किसने दिया' उसका उत्तर यहाँ आ गया है।

ब्रह्मा व इन चार ऋषियों में ये भिन्नता है कि सीधा परमेश्वर से ज्ञान लेने की पात्रता इन चारों में थी जबकि ब्रह्माजी ने सीधा परमेश्वर से ज्ञान ग्रहण न कर ऋषियों से ग्रहण किया है।

आपने कहा अग्नि आदि ऋषि पहले हुए और ब्रह्मा जी बाद में हुए। इसके लिए महर्षि दयानन्द का कथन है कि ये सभी ऋषि आदि सृष्टि में हुए अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ में हुए।

**(ख)** आप भाषा के प्रयोग को समझें, भाषा में एक ही शब्द अनेक वस्तुओं का कहने वाला हो सकता है। जैसे एक 'गो' शब्द गाय, वहणी, इन्द्रियाँ, पृथिवी आदि को कहता है। वैसे ही 'ब्रह्मा' शब्द भी अनेक का द्योतक हो सकता है। जिस ब्रह्मा ने चारों वेद पढ़े वह एक व्यक्ति विशेष मनुष्य है। किन्तु जिस ब्रह्मा की उपासना करने का प्रसंग है वहाँ कोई मनुष्य रूपी व्यक्ति विशेष नहीं अपितु वहाँ तो उपासना परमेश्वर की करनी है और परमेश्वर के असंख्य नामों में एक नाम 'ब्रह्मा' भी है, जिसका अर्थ महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं- "(बृह् बृहि वृद्धौ) इन धातुओं से ब्रह्मा शब्द सिद्ध होता है। **योऽखिलं जगन्निर्माणेन बर्हति (बृंहति) वर्द्धयति स ब्रह्मा,** जो सम्पूर्ण जगत् को रचके बढ़ाता है इसलिए परमेश्वर का नाम 'ब्रह्मा' है।" स.प्र.स. १

ब्रह्मा परमेश्वर का एक नाम है, इसके अनेकों प्रमाण हैं-

**स ब्रह्मा स विष्णुः..........**।। कैवल्य उपनिषद् .१.८

**इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र..............**।। ऋग्वेद ८.१६.७

**सोमं राजनं.............ब्रह्माणंच बृहस्पतिम्।।**

-साम. १.१.१०.१

**ओं खं ब्रह्म।।** यजु. ४०.१७

**यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह।**

**ब्रह्मा मा तत्र नयतु ब्रह्मा ब्रह्म दधातु मे।।**अथर्व-१९.४३.८

इन सभी वेद शास्त्रवचनों में ईश्वर का एक नाम ब्रह्म= ब्रह्मा कहा है। जिस परमेश्वर का ब्रह्मा नाम है,उस परमेश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म्' है। इस 'ओ३म्' के जप से परमेश्वर ब्रह्म की उपासना होती है न कि चारों वेद को पढ़ने वाले ब्रह्मा नाम वाले महर्षि की। यदि अध्ययन करने वाला प्रकरणविद् हो तो वह स्वयं समझ सकता है कि 'ब्रह्मा' शब्द परमेश्वर को कह रहा है या ऋषि रूप व्यक्ति विशेष को।

जिस परमेश्वर ने अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा ऋषियों को ज्ञान दिया उसकी उपासना 'ओ३म्' शब्द से करनी चाहिए अथवा परमेश्वर के जो अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर नाम हैं उनसे भी ईश्वर की उपासना की जा सकती है। जैसे न्यायकारी, दयालु, सर्वरक्षक, पवित्र आदि नामों से उपासना कर सकते हैं। मन्त्रों के माध्यम से भी परमेश्वर की उपासना की जाती है। जिस मन्त्र में परमेश्वर की स्तुति हो, प्रार्थना हो उस मन्त्र से उपासना कर सकते हैं, जैसे गायत्री मन्त्रादि।

जो उपासना विषय में ब्रह्मा जी का जिक्र है वह मनुष्य रूपी ब्रह्मा का नहीं अपितु परमात्मा रूपी ब्रह्मा का जिक्र मानना चाहिए। महर्षि दयानन्द की यह बात सदा स्मरण रखें कि जहाँ भी उपासना करने की बात आती है वहाँ उपासनीय केवल परमात्मा ग्रहण करना चाहिए अन्य का नहीं। अस्तु।

**- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**

---

**पृष्ठ संख्या ४१ का शेष भाग....**

गुरुकुल के आचार्य और ३३ ब्रह्मचारी इस यात्रा में सम्मिलित हुए। यह यात्रा २१ सितम्बर को प्रातःकाल वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ ऋषि उद्यान से आरम्भ हुई। यात्रा में सलेमाबाद में निम्बाकाचार्य आश्रम, मन्दिर, वेद पाठशाला, किशनगढ़ में मार्बल कम्पनी, कपड़ा उद्योग, जयपुर में आर्य प्रतिनिधि सभा, चिड़ियाघर, बिड़ला मन्दिर, आर्यसमाज भवन, हवामहल, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जन्तर-मन्तर, किला, विधानसभा, जड़ी-बूटी उद्यान, आयुर्वेदिक चिकित्सालय, पंचकर्म चिकित्सा, खाटू श्याम मन्दिर, पीपराली, लोहारगढ़, पहाड़ी के ऊपर मन्दिर, नवलगढ़ की हवेली, पिलानी में श्री घनश्यामदास जी बिड़ला का जन्म स्थान, झुंझनू में राणी सती मन्दिर, खेड़ली में ताँबा खदान और कारखाना, विशाल जलशोधक यन्त्र, राजा अजीतसिंह जी का महल, मण्डावा में आर्यसमाज, हवेली में स्वर्ण चित्रकला, सरदारशहर में आर्यसमाज, गंगानगर में अन्धविद्यालय, गूंगे-बहरे बच्चों का विद्यालय, नेत्र चिकित्सालय, फतूही में स्वामी सुखानन्द जी का कन्या गुरुकुल विद्यालय, हिन्दूमल-कोट भारत-पाक सीमा, तालछापर में हिरण आदि जंगली जानवर, लाडनू के जैन विश्व भारती संस्था और जैन ग्रन्थालय आदि अनेक स्थानों को देखा। अन्त में लाडनू आर्यसमाज देखने के बाद रात्रि बारह बजे ऋषि उद्यान पहुँचे। इस भ्रमण काल में बस में भोजन करना, विभिन्न स्थानों पर स्वागत-सत्कार आदि विशेष आनन्ददायक रहा। कुछ स्थानों में संध्या, हवन, व्याख्यान और शंका समाधान का कार्यक्रम भी हुआ।

२. रविवार ११ अक्टूबर को यज्ञ-सत्संग के उपरान्त मन्त्री **श्री ओममुनि जी** के निर्देशन में एक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें ऋषि मेले की तैयारियों पर चर्चा की गयी।

**३. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम-**

**(क) ९ से ११ अक्टूबर-** आर्यसमाज बुढ़ाना गेट, मेरठ में आर्यसमाज स्थापना दिवस पर व्याख्यान किया।

**(ख) १७-१८ अक्टूबर-** श्री सुभाष नवाल के घर पर यज्ञ सत्संग।

**आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम-सम्पन्न कार्यक्रम-**

**(क) २ से ४ अक्टूबर-** जमानी आश्रम, इटारसी में यज्ञ।

**(ख) ७ से ११ अक्टूबर-** आर्यसमाज मॉडल टाउन, हिसार, हरियाणा में उपदेश प्रदान।

**(ग) १० से ११ अक्टूबर-** आर्यसमाज कूकावी, सहारनपुर, उ.प्र. के वार्षिकोत्सव में प्रवचन।

**(घ) १२ से १८ अक्टूबर-** आर्यसमाज सैक्टर-१५, सोनीपत में प्रवचन प्रदान।

**(ङ) २४ अक्टूबर-** आर्यसमाज कानोदा, बहादुरगढ़ में सवामन घी से यज्ञ।

**आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम-सम्पन्न कार्यक्रम-**

**(क) १०-११ अक्टूबर-** आर्यसमाज काकूवी, सहारनपुर में वार्षिकोत्सव पर व्याख्यान किया।

**(ख) १३ अक्टूबर-** आर्यसमाज रुहालकी, हरिद्वार में उपदेश किया।

**(ग) १७ अक्टूबर-** गाजियाबाद में पारिवारिक यज्ञ सत्संग।

# अतिथि यज्ञ के होता बनें

**महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।**

**सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।**

***प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ***- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

***अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।***

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

## अतिथि यज्ञ के होता

### ( ०१ से १५ अक्टूबर २०१५ तक )

१. श्री ओमवीर सिंह, जयपुर, राज. २. श्री शिवकुमार कुर्मी, जयपुर, राज. ३. श्री नन्दलाल गुलाटी, नई दिल्ली ४. श्री अवनिश कपूर, नई दिल्ली ५. श्री सुमील कुमार अरोड़ा, जयपुर, राज. ६. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली ७. श्री किशोर काबरा, अजमेर ८. श्री देवमुनि, अजमेर ९. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर १०. श्री गिरधारीलाल आर्य, अलीगढ़, उ.प्र. ११. श्री सुभाष अग्रवाल, मुम्बई, महा. १२. श्री रामदयाल गौतम, बान्दीकुई, राज. १३. श्रीमती नीलम जी, दिल्ली १४. श्री रमेशचन्द, शाजाहानपुर, म.प्र. १५. श्री सदोरोमल खुबानी, गाजियाबाद, उ.प्र. १६. डॉ. नवदीपसिंह दलाल, रोहतक, हरि. १७. श्री राजेश चौपड़ा, कानपुर १८. श्रीमती एच. इन्द्रा रानकु, आ.प्र. १९. श्री कृष्णसिंह राठी, झज्जर, हरि. २०. जैनिथ इन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली २१. डॉ. ब्रह्मदेव, हरिद्वार २२. श्री राजेश कुमार, नई दिल्ली २३. श्रीमती अनुपमासिंह, नई दिल्ली २४. श्रीमती उषा रमेश मुनि, अजमेर २५. श्री मांगीलाल गोयल, अजमेर २६. श्री अनिल के. सिंघल, नई दिल्ली २७. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. २८. श्री गौरव मिश्रा, अजमेर २९. श्री आदित्य स्वामी, बीकानेर, राज. ३०. श्री भवन भाई पटेल, गुजरात ३१. श्री आर्य जितेन्द्र, सोनीपत, हरि. ३२. श्री हर्षवर्धनसिंह राठौड़ ३३. श्री जयपालसिंह आर्य, गाजियाबाद, उ.प्र. ३४. श्री मेहता माता, अजमेर ३५. श्री अमित कुमार शर्मा, हंडवार, उ.ख. ३६. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर ३७. स्वस्तिकाम: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा.।

**- परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

## गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

## ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

### ( ०१ से १५ अक्टूबर २०१५ तक )

१. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला केन्ट २. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३. श्री रामरतन विजयवर्गीय, अजमेर ४. श्री राजेश, अजमेर ५. श्री मयंक कुमार, अजमेर ६. श्रीमती नीलम, दिल्ली ७. श्री मित्रसेन, हिसार, हरि. ८. श्री कैलाशचन्द्र शर्मा, अजमेर ९. श्री नन्दकुमार, अजमेर १०. श्रीमती अर्चना माथुर, कोटा, राज. ११. श्री कृष्णसिंह, झज्जर, हरि. १२. श्रीमती मीना अग्रवाल, अजमेर १३. श्री आनन्दमुनि, हिसार, हरि. १४. श्री अधिराजसिंह तौमर, अजमेर १५. श्री राकेश सोनी, पीसांगन, राज. १६. श्रीमती अर्चना भण्डारी, अजमेर १७. श्रीमती उषा रमेशमुनि, अजमेर १८. श्री जितेन्द्रसिंह वेदी, अजमेर १९. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. २०. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. २१. श्री शिवकुमार आर्य, नागपुर, महा. २२. श्री कमलेश पुरोहित, अजमेर २३. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर २४. श्रीमती गीतादेवी चौहान, अजमेर २५. श्रीमती आशा अरोड़ा, अजमेर २६. श्री जयप्रकाश बजाज, पश्चिम कचहरी मार्ग २७. श्रीमती पुष्पा अग्रवाल, जयपुर, राज. २८. श्री जगदीश नारायण, अजमेर २९. कै. चन्द्रप्रकाश त्यागी, हरिद्वार, उ.ख. ३०. श्री रुद्रकुमार वर्मा, अलवर, राज.।

**- परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

# स्तुता मया वरदा वेदमाता-२१

### सम्यञ्चोऽग्नि सपर्यत

प्रसंग है परिवार को एक सूत्र में बांधकर रखने के क्या उपाय हैं। मन्त्र कहता है- परिवार के लोग कहीं तो मिलकर बैठे। मिलकर बैठने का एक मात्र स्थान है- यज्ञ वेदि। यज्ञ जब भी करेंगे तब मिलकर बैठेंगे। यज्ञ करते हुए दोनों लोग परस्पर मिलकर कार्य सम्पादित करते हैं। इस समय ऋत्विज यज्ञ कराने वाले तथा यजमान यज्ञ करने वाले दोनों एक मत होकर यज्ञ करते हैं। ऋत्विज् यजमान का मार्गदर्शन करते हैं और यजमान ऋत्विज् के निर्देशों का पालन करते हैं। मन्त्र में निर्देश है। परिवार के लोग अग्नि की उपासना करो और कैसे करने चाहिये तो कहा गया - सम्यञ्च अर्थात् भलीप्रकार मिलकर सब लोग अग्नि की उपासना करें।

यज्ञ का स्थान विद्वानों का, बड़ों के निर्देश का पालन प्राप्त करने का स्थान है, यज्ञ की सफलता यज्ञ को श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करने में है। यजमान आदरपूर्वक निर्देशों का पालन करते हुए यज्ञ सम्पादित करते हैं। जिस परिवार में प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक यज्ञ किया जाता है, वहाँ परस्पर प्रेमभाव बना रहता है। बड़ों व विद्वानों के प्रति आदर का भाव रहता है। यज्ञ करने से मनुष्य में उदारता का भाव उत्पन्न होता है। यज्ञ में मनुष्य देने का दान करने का सहयोग करने का भाव रखता है। यज्ञ से मन की संकीर्णता और स्वार्थ की वृत्ति समाप्त होती है। मनुष्य जब यज्ञ करने का विचार करता है, उसी समय उसके अन्दर सात्विक भाव उत्पन्न होते हैं। सात्विक विचारों का लक्षण यही बताया गया है। मनुष्य दान देना, यज्ञ करना, वेद पढ़ना, परोपकार करना आदि विचार करता है, उस समय उसके मन में सतोगुण का उदय होता है। यज्ञ करने से मनुष्य की सात्विक वृत्ति का विस्तार होता है। यज्ञ से मन का विस्तार होता है। विस्तार खुलेपन का प्रतिक है। बन्धन है परोपकार मुक्ति है।

इसीलिये यज्ञ की भावना से कार्य करने का निर्देश किया है, श्री कृष्ण अर्जुन को कहते हैं- इस संसार में यज्ञ भावना से रहित होकर कोई व्यक्ति बन्धन से मुक्ति नहीं हो सकता। इसलिये मनुष्य को कोई भी कार्य यज्ञ भावना से युक्त होकर करना चाहिए। यज्ञ में समर्पण है, साथ है, साथ से संग को लाभ मिलता है तथा संवाद का अवसर भी प्राप्त होता है। समर्पण भी होता है, यही भाव परिवार में सब को एक साथ रखने के लिये आवश्यक है, उपयोगी है। मन्त्र कहता है- परिवार के लोग मिलकर यज्ञ करें, आदरपूर्वक यज्ञीय भावना से करें, इससे परिवार के सदस्यों के मन पवित्र और आदर की भावना से युक्त होते हैं। इसका परिणाम सब परस्पर जुड़े रहते हैं।

मन्त्र का अन्तिम वाक्य है- **आरा नाभिभिवामितः।** जैसे यज्ञ करने वाले यज्ञ रूप नाभि से सभी बन्धे रहते हैं, उसी प्रकार परिवार के सदस्य भी केन्द्र से जुड़े रहते हैं। मन्त्र में उपमा दी गई है। जिस प्रकार गाड़ी आरे अक्ष से जुड़े रहते हैं और अपना-अपना कार्य करते हुए केन्द्र से बंधे रहते हैं। उसी प्रकार परिवार के सदस्यों का भी एक केन्द्र होना चाहिए, जिससे सभी सदस्य जुड़े रहें। जहाँ एक व्यक्ति के निर्देशन में परिवार चलता है, वहाँ सभी कार्य व्यवस्थित होते हैं, सभी एक दूसरे का ध्यान रखते हैं। जहाँ यज्ञीय भावना नहीं होती, वहां सब अपने-अपने बारे में ही सोचते हैं, वहां स्वार्थ बुद्धि होती है। स्वार्थ से मन में द्वेष भाव और अन्याय उत्पन्न होता है। अतः मन्त्र में दो बातों को एक साथ बताया है, घर में यज्ञ होना चाहिए, सभी लोग मिलकर श्रद्धा से यज्ञ करेंगे तो परिवार के लोग परस्पर आरे की भांति केन्द्र से जुडेंगे, बड़ों से सम्बन्ध बनाकर रखेंगे तभी परिवार एक होकर रह सकता है, परिवार में सुख, शान्ति बनी रह सकती है।

क्रमशः .......

# संस्था - समाचार

**०१ से १५ अक्टूबर २०१५**

**१. यज्ञ एवं प्रवचन**- जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात: काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द द्वारा रचित आर्योद्देश्यरत्नमाला नामक लघु ग्रन्थ का स्वाध्याय कराया जाता है।

प्रात:कालीन यज्ञ के पश्चात् यात्रा का अनुभव सुनाते हुए **आचार्य डॉ. धर्मवीर जी** ने कहा कि ज्ञान प्राप्ति के पाँच साधन हैं। उनमें देशाटन पहला है। दूसरा साधन है अलग-अलग शास्त्रों के जानने वाले विद्वानों से वार्तालाप करना तथा अपने-अपने व्यवसाय में कुशल व्यवसायी व्यक्तियों के साथ रहना। अन्य साधन शास्त्रों का अध्ययन, प्रतिभा, अनुभव आदि से विशेष ज्ञान प्राप्त होता है। वनों एवं पर्वतीय क्षेत्रों में भ्रमण करने पर कठिनाइयों से जूझने का भी अनुभव होता है। पर्यटन से विशेष सुख, आनन्द और ज्ञान प्राप्त होता है।

ऋग्वेद की व्याख्या करते हुए कहा कि सृष्टि का जब प्रारम्भ हो रहा था। उस समय मृत्यु नहीं था, अमृत नहीं था, प्रकाश नहीं था, न दिन था, न रात थी। दिन-रात एक दूसरे की अपेक्षा से होते हैं। सूर्य नहीं था इसलिये दिन भी नहीं था। कुछ भी कहने योग्य नहीं था। अतिरिक्त कुछ भी सक्रिय चेतन दिखने वाला नहीं था। सृष्टि से पूर्व अंधकार था, गहरा अंधकार था। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने इच्छा की, जिसके तप अर्थात् श्रम से अव्यक्त प्रकृति रूप उपादान कारण से सबसे पहले महत्त्व उत्पन्न हुआ।

**रक्षन्ति पुण्यानि पुरा कृतानि....** श्लोक की व्याख्या करते हुए बताया कि फल का कर्म से अनिवार्य सम्बन्ध होता है। मनुष्य द्वारा किया गया अच्छा या बुरा कर्म निष्फल नहीं होता। प्रत्येक कर्म का फल अवश्य होता है, चाहे वह तत्काल मिले या देर से या अगले जन्म में मिले, किन्तु मिलना निश्चित है। जैसे कि कोई मनुष्य कभी भारी संकटों में फँस कर मृत्यु के अत्यन्त निकट पहुँचने पर भी अच्छा कर्म करता है, उसका फल सुख आनन्द ही मिलता है। इसी प्रकार कोई मनुष्य पूर्वजन्म में किये हुए श्रेष्ठ कर्मों के कारण धनवान के घर में जन्म पाकर बिना परिश्रम किये ही धनाढ्य हो जाता है। धर्म करके या अधर्म करके मनुष्य भूल सकता है किन्तु परमात्मा नहीं भूलता और समय आने पर धर्म-अधर्म का फल सुख-दु:ख के रूप में अवश्य देता है। किसान अपने खेत में बीज बोता है, खाद, पानी डालता है तो उसके खेत में फसल अवश्य होती है। कुछ जल्दी होती है कुछ देर से होती है किन्तु अनिवार्य रूप से होती है।

श्राद्ध की व्याख्या करते हुए आचार्य जी ने कहा कि श्रद्धापूर्वक अपने पितरों अर्थात् जीवित माता-पिता, विद्वानों एवं अन्य वृद्धों की तन-मन-धन से सेवा आदि करना श्राद्ध कहाता है। शतपथ ब्राह्मण में श्रद्धा सहित पिण्ड तर्पण करना बताया गया है। पिण्ड और तर्पण शब्द का ठीक प्रकार विचार करने से निष्कर्ष निकलता है कि अलग-अलग उपयोगी पदार्थों को पोटली में इकट्ठा करके समर्पित करना पिण्ड तर्पण कहलाता है। वर्षाकाल में कृषि सम्बन्धी कार्य का अवकाश होने के कारण किसानों के पास खाली समय अधिक होता है, अत: प्राचीन काल से ही चातुर्मास में वेदविद्या का प्रचार-प्रसार करने के लिये विद्वानों, संन्यासियों, वानप्रस्थियों को बुलाया जाता था अथवा वे स्वयं ही आ जाते थे। उनसे ज्ञान प्राप्त कर बदले में अन्न, वस्त्र एवं अन्य पदार्थ पोटली बनाकर देना पिण्ड तर्पण कहलाता था। आश्विन माह में अमावस्या के दिन को विशेष पर्व के रूप में मनाया जाता है। मरे हुए पूर्वजों के लिये पिण्डदान आदि करना/करवाना पौराणिक ब्राह्मणों की जीविका का साधन मात्र है। उस दिन विशेष खीर, मिष्ठान्न आदि बनाकर ब्राह्मणों को भोजन करवाया जाता है।

प्रात:कालीन यज्ञ के पश्चात् **श्री सत्येन्द्रसिंह जी** ने ऋग्वेद के मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि मनुष्यों को अपने शारीरिक, बौद्धिक श्रम से ही धन कमाना चाहिये। चोरी, डकैती, मिलावट, रिश्वत, छल-कपट से कमाया हुआ धन सब प्रकार से हानिकारक होता है। जो धन पुरुषार्थ से प्राप्त हो, उससे अपने और परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के पश्चात् सामर्थ्य के अनुसार परोपकार के लिये प्रसन्नतापूर्वक दान करना चाहिये। धन प्राप्त करके सहनशील बनना चाहिये, अहंकार नहीं करना चाहिये। अर्थव्यवस्था ऐसी होनी चाहिये जिससे राष्ट्र के सभी नागरिकों को उनके अपने योग्यता और कर्म के अनुसार शिक्षा, रोजगार, भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा

आदि मिल सके। इस प्रकार की आदर्श अर्थव्यवस्था, केवल वैदिक- अर्थव्यवस्था ही है जो सार्वकालिक, सार्वदेशिक, सार्वभौमिक है अर्थात् संसार के सभी देशों के लिये सदा सुखदायक होती है। वैदिक- अर्थव्यवस्था से भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार से व्यक्ति परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व में सुख, शान्ति, समृद्धि पाता है। पूँजीवादी और साम्यवादी अर्थव्यवस्था मानवीय बुद्धि की उपज हैं, जो पूर्ण सुखदायक नहीं हैं।

गीता-निकेतन विद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरि. के छात्रगण अपने शिक्षकों के साथ ऋषि उद्यान में संचालित गतिविधियाँ देखने आये। गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारियों द्वारा वेदमन्त्रों का पाठ और अग्निहोत्र देखकर वे प्रसन्न हुए। यहाँ की स्मृतियों को सुरक्षित करने के लिये मोबाइल एवं कैमरा से फोटो खींचकर ले गये। उनको सम्बोधित करते हुए **श्री सत्येन्द्रसिंह जी आर्य** ने कहा कि वर्तमान समय में विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले पाठ्यक्रमों से छात्रों के व्यक्तित्व का समग्र विकास नहीं हो पाता है। विद्यालय में पढ़कर केवल बौद्धिक विकास ही होता है, जिससे वे प्रशासनिक कर्मचारी व अधिकारी, डॉक्टर, इञ्जीनियर, वकील, अध्यापक, व्यवसायी आदि बनते हैं। यह व्यक्तित्व विकास का एक तिहाई भाग है। किन्तु आध्यात्मिक विकास नहीं हो पाता, जिसके फलस्वरूप समाज में भ्रष्टाचार, अपराध और विभिन्न समस्याएँ दिखाई देती हैं। सदाचार, धार्मिकता, मानवता का पाठ नहीं पढ़ाया जाता, इसलिये देश में नास्तिकता, अंधविश्वास, धर्म के नाम पर धोखाधड़ी बढ़ती जा रही है। समाज और राष्ट्र के हित में सत्यभाषण, न्याय-आचरण, धर्म, परोपकार आदि का व्यवहार करें। सब छात्रों को यशस्वी, विद्वान्, चरित्रवान होने का आशीर्वाद दिया।

ऋग्वेद के ओम् उदुत्तमं वरुण पाषम्...... की व्याख्या करते हुए बताया कि मध्य काल में इस मन्त्र का अर्थ ठीक से नहीं समझने के कारण पशु बलि और नर बलि होती थी। काल्पनिक अर्थ के कारण अन्य विद्वेषी विद्वान् वेद में बलि प्रथा मानते थे। महर्षि दयानन्द जी ने वरुण का अर्थ करते हुए सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में लिखा है- जो आप्तयोगी, विद्वान्, मुक्ति की इच्छा करने वाले मुक्त और धर्मात्माओं का स्वीकारकर्ता अथवा जो शिष्ट, मुमुक्षु, मुक्त और धर्मात्माओं से ग्रहण किया जाता है, वह वरुण नामयुक्त ईश्वर है। हे श्रेष्ठ वरण करने योग्य परमात्मा! हम इस संसार में बन्धनों में बन्धे हुए हैं। तीन प्रकार के बन्धन हैं- एक उत्तम कोटि के बन्धन हैं, उसे ढ़ीला कर दो। कभी नाश न होने वाले परमात्मा आप हमारे ज्ञानेन्द्रियों, मन और बुद्धि को बुरे कार्यों से हटाकर सत्कर्मों में लगाइये। एक मध्य में बन्धन है, उसे विशेष रूप से ढ़ीला कर दीजिये। शरीर के मध्य में पेट और जननेन्द्रिय हैं, उसे भी नियन्त्रण में रखकर धर्म कार्यों में युक्त कीजिये, जिससे हम अधर्म से बचे रहें। नीचे के बन्धनों को नीचे की ओर ही खोल दीजिये। शरीर के निचले भाग पैरों में ज्ञान का अभाव है इसलिये इसे सन्मार्ग में चलने के लिये प्रेरित कीजिये। हम तेरे व्रत में बन्धकर निरपराध हो जायें, जिससे हम निरन्तर सुख में स्थिर रहें। इसका भाव यह है कि जो ईश्वर की आज्ञा का यथावत् नित्य पालन करते हैं, वे ही पवित्र और सब दु:खों से अलग होकर सुखों को निरन्तर प्राप्त होते हैं।

सायंकालीन प्रवचन के क्रम में **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने आर्योद्देश्यरत्नमाला के 'पुरुषार्थ और उसके भेद' पर चर्चा करते हुए बताया कि मनुष्यों को अपना जीवन सफल बनाने के लिय आलस्य छोड़कर तन, मन, वचन और धन द्वारा चार प्रकार से उचित पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिये, जिन पदार्थों का अभाव है, उनके प्राप्ति की इच्छा करना। उनको प्राप्त करने के लिये आलस्य छोड़कर शारीरिक और बौद्धिक श्रम करना। जब इच्छित वस्तुएँ प्राप्त हो जाये तो उन सबकी ठीक से रक्षा करना। रक्षित धन, अन्न आदि पदार्थों को उचित रीति से बढ़ाना और बढ़े हुए पदार्थों को समाज और राष्ट्र के हित में सत्य-विद्या आदि की उन्नति के लिये खर्च करना। जीवन में सफलता के लिये तप, त्याग, पुरुषार्थ के साथ-साथ समय का भी पालन करना चाहिये। परोपकार के विषय में बताया कि जैसे हम अपने लिये सुख चाहते हैं, वैसे ही दूसरे जीवों के सुख के लिये यथा सामर्थ्य प्रयत्न करना चाहिये। गरीबों की धन से सहायता करना, रोगियों की औषध आदि से सेवा करना, अनाथों की रक्षा करना, वेदविद्या और धर्म की वृद्धि के लिये दान करना आदि परोपकार है।

प्रत्येक रविवारीय प्रात:काल बृहद यज्ञ सत्संग में नगर के धर्मप्रेमी सज्जनों, माताओं, बहनों, बच्चों का आगमन होता है। इस अवसर पर पं. रामनिवास गुणग्राहक जी ने प्रार्थना भजन प्रस्तुत किये। ब्र. देवेन्द्र ने एक पारिवारिक गीत सुनाया।

रविवारीय सायंकालीन सत्र में यज्ञ के पश्चात् गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का व्याख्यान अथवा भजन होते हैं। इस क्रम में ब्रह्मचारी सत्यवीर जी ने २१ से २७ सितम्बर तक

**शेष भाग पृष्ठ संख्या ३६ पर....**

# आर्यजगत् के समाचार

**१. शिविर सम्पन्न**- "यज्ञ करने का सबको अधिकार है, सभी वर्ण व जाति, कुल में उत्पन्न हुए पुरुष व स्त्री वेद पढ़ने के अधिकारी हैं, नशा नाश की जड़ है, स्त्री-पुरुष व शूद्र आदि में भेद करना अमानवीय एवं शास्त्र विरुद्ध है" इत्यादि विचार मन्त्री, आर्यसमाज, अजमेर ने नाका मदार में संचालित आर्यवीर दल अजमेर द्वारा आयोजित निःशुल्क योग-प्राणायाम एवं चरित्र निर्माण शिविर के समापन समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में व्यक्त किये।

आर्यवीर दल अजमेर द्वारा चमत्कारेश्वर शिव मन्दिर, डबल स्टोरी के पास के विशाल खेल-मैदान में पाँच दिवसीय निःशुल्क योग-प्राणायाम एवं चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय क्षेत्र के लगभग 65 बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। उक्त शिविर में आर्यवीर दल के वरिष्ठ योग एवं व्यायाम शिक्षक श्री कमलेश जी पुरोहित ने बच्चों को आसन, प्राणायाम, जूडो-कराटे का प्रशिक्षण दिया एवं श्री हेमन्त जी आर्य द्वारा बौद्धिक शिक्षा तथा महापुरुषों की जीवनी पर प्रकाश डाला गया। अन्तिम दिन यज्ञ व व्यायाम प्रदर्शन के साथ शिविर सम्पन्न हुआ तथा जिला संचालक श्री विश्वास पारीक ने शिविर एवं संगठन की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

**२. बुजुर्गों का सम्मान**- ०४ अक्टूबर २०१५ को आर्यसमाज रावतभाटा, राज. में बुजुर्ग सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रीराम बाल विद्या मन्दिर की प्राचार्या ७४ वर्षीय श्रीमती मीरा चटर्जी को शॉल ओढ़ाकर व अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि बच्चों को शिक्षित करना यही मेरे जीवन का उद्देश्य है और गरीब बच्चों की मदद कर उनको आगे बढ़ाने का हर सम्भव प्रयास करती रहूँगी। २५ बुजुर्गों को कम्बल भेंट किये गये। इस पुनीत कार्य के लिये श्री तिलकराम शर्मा, अशोक कुमावत, श्याम कुमार सोनी, गायत्री देवी, राजकुमार सूद ने आर्थिक सहयोग दिया व श्री विनोद कुमार त्यागी ने प्रसाद व मोहनी देवी ने अल्पाहार की व्यवस्था की। आर्यवीर दल के श्री जोतसिंह जी का कार्यक्रम की व्यवस्था बनाने में सहयोग रहा।

**३. सम्मानित**- ठाकुर विक्रमसिंह ट्रस्ट, लाजपतनगर, नई दिल्ली द्वारा दिनांक १९ सितम्बर २०१५ को पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री फाजिल्का को उनके द्वारा समस्त जीवन किए गए वैदिक धर्म, सभ्यता, संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु वैदिक साहित्य के लेखन, प्रकाशन तथा वैदिक शिक्षा परिषद् फाजिल्का के माध्यम से प्राइमरी से कॉलेज स्तरीय पाँच ग्रुपों में प्रतिवर्ष वैदिक ज्ञान परीक्षा, नर्सरी से दूसरी कक्षा तक पाँच ग्रुपों में रंग भरो प्रतियोगिता, महर्षि दयानन्द चित्रकला, महर्षि दयानन्द बाल कॉमिक्स, वेद मन्त्रोच्चारण, सुलेख, पर्यावरणीय भाषण प्रतियोगताएँ, विभिन्न सामयिक विषयों पर विचार गोष्ठियों का आयोजन करके छात्र/छात्राओं में नैतिक-चारित्रिक-धार्मिक उत्थान, राष्ट्रीय चेतना, कर्त्तव्य परायणता, सद्भावना, शिष्टाचार, परोपकार आदि सद्गुणों के विकास एवं निखार हेतु अनवरत प्रयत्नशील रहने के कारण उन्हें ग्यारह हजार रुपये का चेक, शॉल, प्रशस्तिपत्र आदि भेंट कर सम्मानित किया गया।

**४. हिन्दी दिवस मनाया**- आर्यसमाज वाशी द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष वेद प्रचार सप्ताह एवं हिन्दी दिवस समारोह १० से १३ सितम्बर २०१५ तक मनाया गया। वेद प्रचार में यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (अलीगढ़, उ.प्र.) उपस्थित थे। भजनोपदेशिका कुमारी अंजली आर्या-करनाल, हरि. के मधुर भजनों ने सभी को मोह लिया। यज्ञ, प्रवचन एवं भजनों का कार्यक्रम प्रातः एवं सायं आयोजित किया गया। दोनों विद्वानों ने ज्ञान की गंगा बहाई व बड़ा सुन्दर आध्यात्मिक वातावरण बनाया।

**५. वेद प्रचार सम्पन्न**- आर्यसमाज, मानटाउन एवं महिला आर्यसमाज, सवाई माधोपुर (राज.) के संयुक्त तत्त्वावधान में २५ से २७ सितम्बर २०१५ तक चतुर्वेदशतकम् महायज्ञ एवं वेद ज्ञान की संगीतमय अमृतवर्षा का भव्य आयोजन किया गया। प्रतिदिन यज्ञ, प्रवचन व वैदिक भजन-संध्या का आयोजन किया गया। उक्त आयोजन में यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक प्रवक्ता डॉ. कृष्णपालसिंह जी-जयपुर से पधारे, जिन्होंने स्वयं अपने द्वारा निर्मित सुगन्धित पौष्टिक हवन सामग्री तथा गाय के शुद्ध घृत, जिसमें केसर, इलाइची, जायफल इत्यादि मिश्रित थे उससे लगभग २१ यज्ञमान दम्पत्तियों से यज्ञ में विधिपूर्वक वैदिक मन्त्रों से आहुतियाँ दिलवाईं। बरेली, उ.प्र. से पधारे श्री विमलदेव अग्निहोत्री एवं करनाल, हरि. से पधारी बहिन सुश्री अंजली आर्या ने अपने सुमधुर भजनों की सरिता से सभी श्रोताओं का मनमोह लिया।

**शेष भाग पृष्ठ संख्या ६ पर.....**

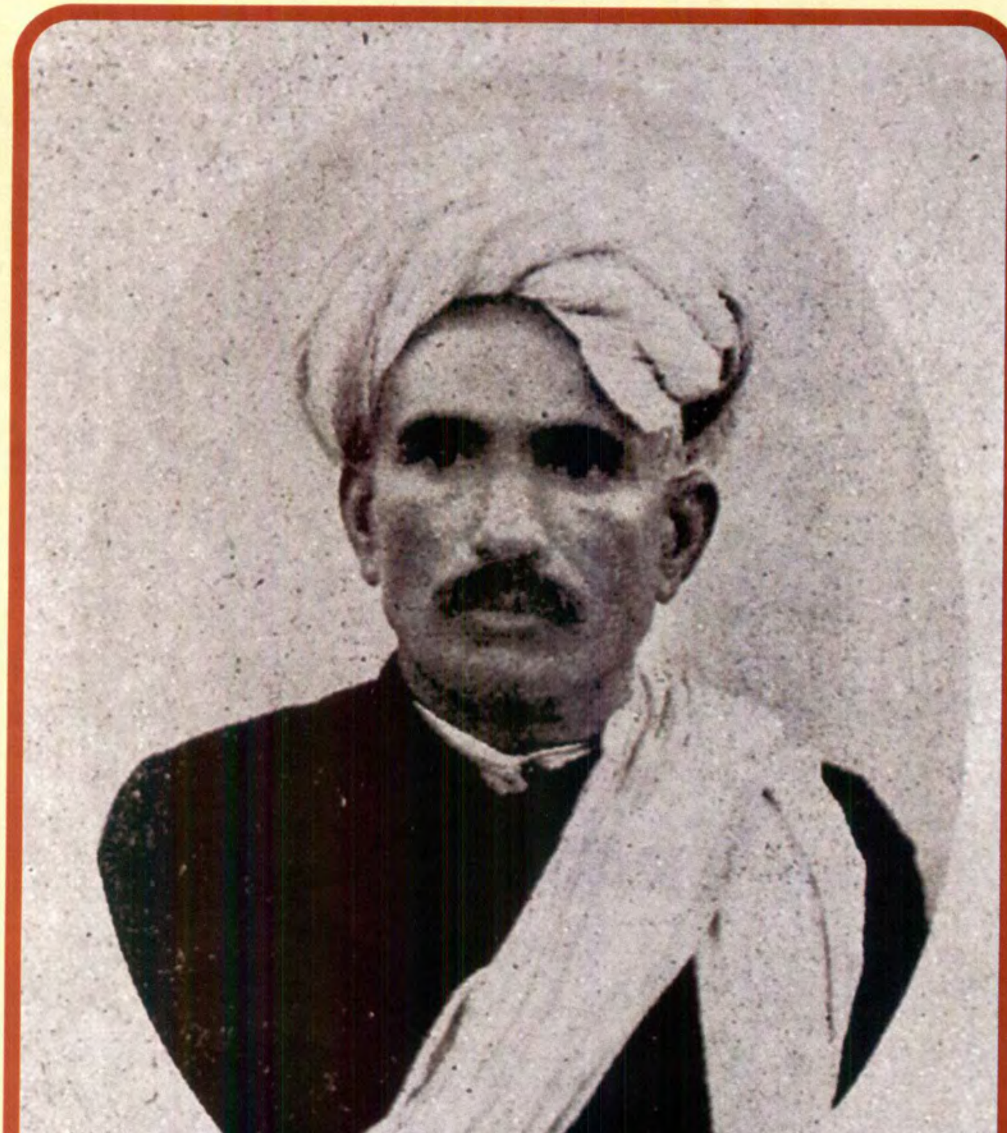

वर्तमान समय में इन्हीं पोपटलाल के हाथ में कर्सनजी की सब मिलिक्यत है।

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : ३० अक्टूबर, २०१५ ३९५९/५९

यह घटना महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की टंकारा में मनाई गयी जन्मशताब्दी ( ७ से ११ फरवरी २०२३ ) के अवसर की है, जब ११/०२/१९२३ बृहस्पतिवार के दिन मध्यान्ह के कार्यक्रम में ऋषि के इस ( इब्राहीम ) बाल सखा को इस तरह अचानक अपने सामने खड़ा देखकर सभा मण्डप में सर्वत्र विस्मय छा गया।

प्रेषकः
**परोपकारिणी सभा**
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
( राजस्थान ) - ३०५००१



सेवा में,